कर्णावती दर्पण

अंक-2 वर्ष : 2007-08

जगत मंदिर, द्वारका

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, अहमदाबाद - II
नवरंगपुरा, अहमदाबाद - **380 009**

'गणतंत्र दिवस'– **26** जनवरी, **2007** के अवसर पर ध्वजारोहण करते हुए
श्री के. आर. भार्गव, आयुक्त, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, अहमदाबाद – II

कर्णावती दर्पण

अंक-2 विभागीय पत्रिका वर्ष : 2007-08

संरक्षक

श्री अजीत कुमार

मुख्य आयुक्त

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, अहमदाबाद क्षेत्र

प्रधान संपादक

श्री के. आर. भार्गव

आयुक्त

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, अहमदाबाद - II

परामर्शदाता

श्री दीपक अरोड़ा - श्री एम.आर.आर. रेड्डी

अपर आयुक्त

संपादक

श्री प्रताप डी. डावरा

सहायक निदेशक (राजभाषा)

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, अहमदाबाद-I

सहयोगी

श्रीमती अर्चना मिश्रा, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

प्रकाशक

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, अहमदाबाद-II

''सीमा शुल्क सदन'', नवरंगपुरा, अहमदाबाद - 380 009

रचनाओं में व्यक्त विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	लेखक	पृ.सं.
01	संदेश	श्री अजीत कुमार	3
02	प्रधान संपादक की कलम से	श्री के. आर. भार्गव	4
03	संदेश	श्री दीपक अरोड़ा	5
04	संदेश	श्री एम. आर. आर. रेड्डी	6
05	सम्पादकीय	श्री प्रताप डी. डावरा	7
06	सरस्वती वंदना		8
07	सनातन धर्म की स्वर्ग भूमि कैलाश मानसरोवर की सामान्य जानकारी	श्री जिग्नेश सोयंतर	9
08	जीवन का तूफान	सुश्री कविता भटनागर	11
09	गुजरात वैभव	श्री राधेश्याम गुप्त ''विशारद''	12
10	इतिहास की काली रात में	श्रीमती अभिलाषा फणीभूषण	14
11	बुद्धि परखने का नया मापदंड ''स्पिरिच्यूअल इन्टेलिजन्स''	श्री योगेश शाह	15
12	हल्की सी मुस्कान	श्रीमती लवली गर्वासिस	17
13	नव वर्ष	श्री अभिषेक बाजपेयी	18
14	गरीबी एक दूषण या श्राप	श्री ए. वी. जोशी	19
15	क्या खोया और क्या पाया ?	श्रीमती अर्चना मिश्रा	20
16	हमारे बच्चे	श्री दीपक एस. पटेल	21
17	एक प्रेरक प्रसंग	संकलनकर्ता - श्री डोरिया विपिनचंद्र एन.	22
18	जीवन	श्री जे. एस. रामदेवपुत्रम	24
19	एक राष्ट्र एक भाषा - राजभाषा हिन्दी	श्री संजय आर. शुक्ल	25
20	पंद्रह अगस्त के अक्षरों का अर्थ	श्री अमित कुमार	26
21	साहसी महिलाओं द्वारा स्कूटर यात्रा	श्रीमती रुपा के. याज्ञिक	27
22	सोचता रहा	श्री मनोज कुमार शर्मा	29
23	पूज कभी इंसान को	श्री देव भूषण मिश्रा	29
24	मेरी साइकिल यात्रा	श्री संजय आर. शुक्ल	30
25	'ली' का कमाल	संकलनकर्ता-श्रीमती अर्चना मिश्रा	32
26	क्या आप जानते हैं ?	संकलनकर्ता-श्री देवभूषण मिश्रा	33
27	खेलों का राजा - पर्वतारोहण	श्री के. एम. याज्ञिक	34
28	इंसान या हैवान	श्रीमती अनुपमा मुन्जाल	35
29	गरीबी ना सही गरीब हटाओ	सुश्री दीप्ति शरण	36
30	अंतर - साहित्य दर्शन (क) जिन्दगी (ख) मुक्तक	श्री जे. आई. वोहरा	37
31	जागा सपना है	श्री अजीत आर. सिंह	39
32	फूल और कांटा	सुश्री कविता भटनागर	40
33	हिन्दी सप्ताह का आयोजन - वर्ष-2006	संकलनकर्ता-श्री आर. जे. क्रिश्चियन	41
34	भूल गया	श्री दीपक एस. पटेल	42
35	आइए छुट्टी यात्रा रियायत को जाने	श्री के. देवीदासन	43
36	आइए चिकित्सा सुविधा को जाने	श्री के. देवीदासन	45
37	आइए पंचनामा को जाने	श्री योगेश शाह	46
38	आइए हिन्दी में काम करें	संकलन	48
39	अनुशासन का महत्व	श्री हनी के. याज्ञिक	52

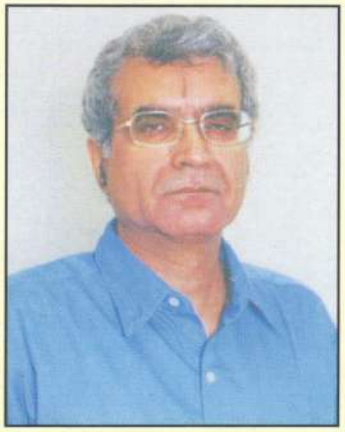

संदेश

विभागीय पत्रिका ''कर्णावती दर्पण'' के प्रकाशन से मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। अन्य भाषाओं में हम चाहे कितने ही माहिर क्यो न हों, अपनी राष्ट्रभाषा के बिना हमारी प्रगति अधूरी है। कार्यभाषा हिन्दी का हृदय बहुत विशाल है, यह केवल कार्यभाषा ही नहीं बल्कि हमारे सामाजिक तथा औद्योगिक संबंधों की धड़कन है हिन्दी के विकास व संपर्क तथा भावनाओं के आदान-प्रदान में पत्र-पत्रिकाओं की बहुत सरल और सौम्य भूमिका हो सकती है।

मैं ''कर्णावती दर्पण'' के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ और उम्मीद करता हूँ कि यह पत्रिका प्रेरणास्पद एवं उपयोगी सिद्ध होगी। इस पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग करने वाले अधिकारियों को मैं धन्यवाद देता हूँ और साथ ही हार्दिक शुभकामनाएँ प्रदान करता हूँ।

अजीत कुमार
मुख्य आयुक्त
केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, अहमदाबाद क्षेत्र

प्रधान संपादक की कलम से

मुझे ''कर्णावती दर्पण'' विभागीय पत्रिका का दूसरा अंक प्रस्तुत करते हुए अत्यंत गौरव का अनुभव हो रहा है, एवं सुखद अनुभूति है कि हम निरंतर हिन्दी भाषा का अपने कार्यालय के काम में प्रयोग कर रहे हैं।

मुझे यह कहते हुए बहुत प्रसन्नता हो रही है कि बहुत सारे अधिकारियों और कर्मचारियों ने अपनी रचनाएँ इस पत्रिका में देकर अपना उत्साह और समर्पण दिखाया है। मैं उन सबका आभारी हूँ और अपेक्षा करता हूँ कि भविष्य में ऐसा ही उत्साह दिखाकर राजभाषा को अपनी समर्पणता दिखाएँगे।

मैं 'कर्णावती दर्पण' के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ और उम्मीद करता हूँ कि यह पत्रिका प्रेरणास्पद एवं उपयोगी सिद्ध होगी।

के. आर. भार्गव

आयुक्त,

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, अहमदाबाद - II

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, अहमदाबाद-II अपनी विभागीय पत्रिका का दूसरा अंक प्रकाशित करने जा रहा है।

विभागीय वरिष्ठ अधिकारियों और कर्मचारियों ने पत्रिका के प्रकाशन हेतु अपनी रचनाएँ देकर स्पष्ट कर दिया है कि वे कर संग्रह और तकनीकी प्रवृत्ति के कार्य को करने के साथ-साथ नया सृजन करने में भी सक्षम हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका इस आयुक्तालय के गौरव के अनुरूप अपनी समाहित रचनाओं से सभी पाठकों को प्रभावित करेगी। पत्रिका को मूर्तरूप देने वाले रचनाकारों से भी यह आशा है कि भविष्य में भी वे राजभाषा हिन्दी के प्रति कर्त्तव्य का बोध कराते रहेंगे।

दीपक अरोड़ा

अपर आयुक्त (का.व स.)

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, अहमदाबाद - II

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि राजभाषा हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए हमारा कार्यालय अपनी विभागीय पत्रिका 'कर्णावती दर्पण' अंक-**2** को प्रकाशित करने जा रहा है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि विभागीय पत्रिकाओं के प्रकाशन से लेखन के प्रति कर्मचारियों का उत्साहवर्धन होता है और हिन्दी का प्रयोग भी बढ़ता है।

अत: इस पत्रिका के प्रकाशन के अवसर पर हम यह संकल्प करें कि अपने राष्ट्र के विकास के लिए राजभाषा के कार्यान्वयन में अपनी सक्रिय भूमिका निभाते रहेंगे। मैं कर्णावती दर्पण के सुनहरे तथा उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

एम. आर. आर. रेड्डी

अपर आयुक्त

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, अहमदाबाद-II

सम्पादकीय

प्रिय पाठकों,

''कर्णावती दर्पण'', अंक-**2** को आपके हाथों में सौंपते हुए मुझे आनंद का अनुभव हो रहा है।

केन्द्र सरकार के कर्मचारी होने के नाते हमारा दायित्व बनता है कि हम अपने दैनंदिन कार्यों में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करें। इस दृष्टि से पत्रिका प्रकाशन का महत्त्वपूर्ण स्थान है क्योंकि हिन्दी के प्रति रुचि एवं जागृति उत्पन्न करने में विभागीय पत्रिकाएँ सक्षम होती है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह अंक आपके लिए रोचक एवं उपयोगी सिद्ध होगा। आगामी अंकों को और उपयोगी बनाने के लिए हमें आपकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी।

प्रताप डी. डावरा
सहायक निदेशक (राजभाषा)
केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, अहमदाबाद - I

सरस्वती वंदना

या कुन्देन्दुतुषारहार धवलां

या शुभ्रवस्त्रावृत्ता

या वीणावर दण्डमण्डित करा

या श्वेत पद्मासना

या ब्रह्माच्युत शंकरः प्रभूतिभिः

देवैः सदावन्दिता

सा मां पातु सरस्वती भगवती

निःशेष जाडयाऽपहा ।

सनातन धर्म की स्वर्ग भूमि कैलाश मानसरोवर की सामान्य जानकारी

''कैलाश'' अर्थात् स्वर्ग - देवताओं की भूमि और भगवान शंकर का निवास स्थान । एशिया का सबसे पवित्र यह पर्वत पश्चिम तिब्बत के दूर सुदूर के कोने में अडिग खड़ा है । **22,028** फुट की यह चट्टान प्रभु के सिंहासन और पृथ्वी के केन्द्र के समान है, जहाँ देवताओं ने पृथ्वी का यह स्वरुप धारण किया है । भारत की प्रजा में स्वयं ऋषि जैसे पूजनीय हिमालय पार करके उस ओर यह यात्राधाम स्थित है । यह यात्रा शिवत्व के प्रति आरोहण का प्रतीक है । यह यात्रा सत्य, शिव एवं सुन्दर का साक्षात्कार है । आकाश

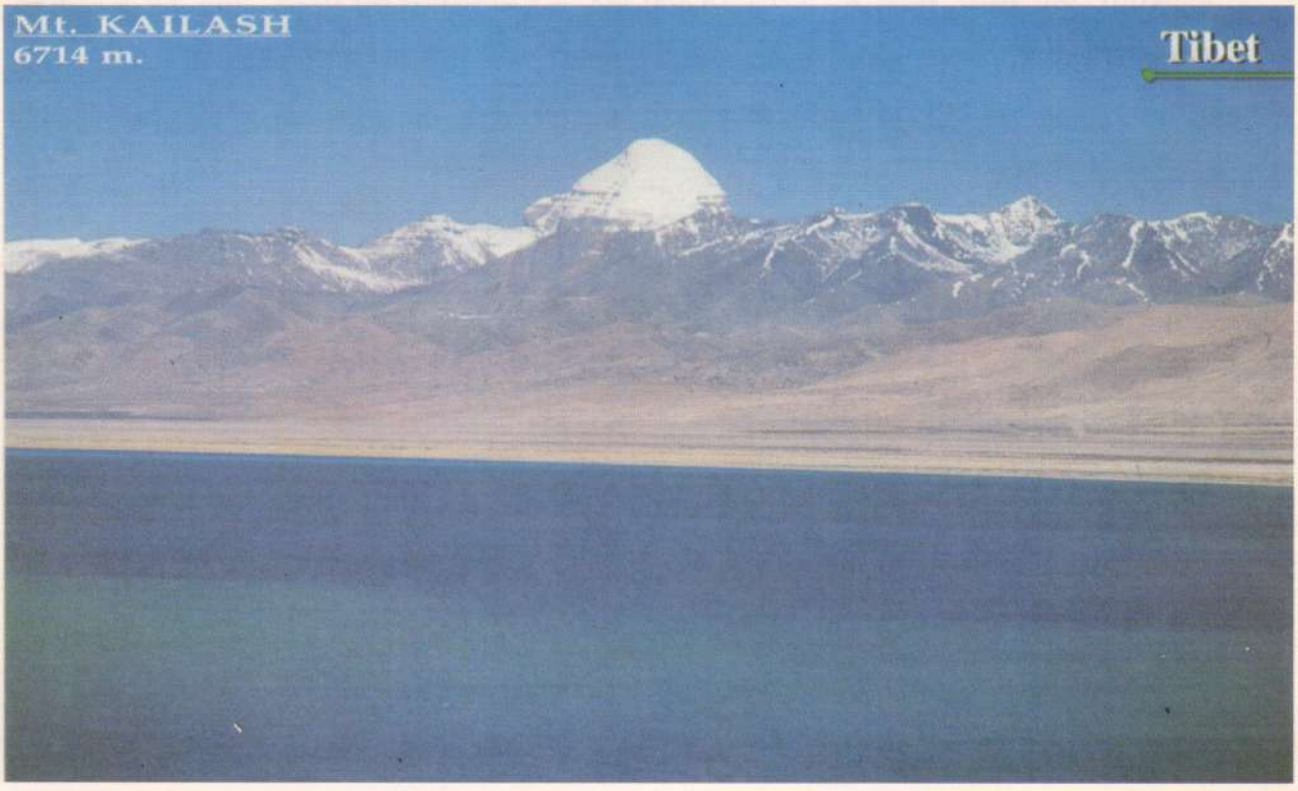

की जलधारा के अन्तर्गत कैलाश पर्वत के दर्शन करके आदमी धन्य-धन्य हो जाता है । कई जन्मों के पुण्य इकठ्ठे हुए हों तब इस भूमि में कदम रखने का अवसर मिलता है । कैलाश पर्वत ज्ञान ज्योति जैसा स्फटिक एवं विशुद्ध लगता है । कैलाश पर्वत का दक्षिणी हिस्सा, नीलमणि, पूर्वी हिस्सा पारदर्शक खनिज, पश्चिमी हिस्सा माणिक और उत्तरी हिस्सा स्वर्ण के रूप में पहचाना जाता है । कुबेर का नगर यहाँ स्थापित है । 'गंगा' कि जो महाविष्णु के चरणों के अँगूठे में से प्रकट हुई, चँद्रमाँ के वलयों में प्रवेश करके कैलाश शिखर पर उतर आई थी । शिव ने उसके डर को कुचलकर उसे अपनी जटाओं में जकड़कर स्वीकारा था । ऐसा माना जाता है कि गंगा कैलाश से उतरकर आई थी और कैलाश की सात बार प्रदक्षिणा करके अपने को चार नदियो में बाँट दिया था । भारत और नेपाल की चार मुख्य नदिया यहीं से उत्पन्न हुई हैं । ये ब्रह्मपुत्रा (लोहिता) इन्दुस (सिन्धु) सतलज (शताद्रु) एवं कर्नाली है । **15,000** फुट की ऊँचाई पर प्रदूषण रहित स्थान पर

अलौकिकता, प्रशांतता, नीरवता के आँदोलनों को भोगने की सामर्थ्यता एवं सतर्कता हो, यह वास्तव में एक अद्‌भुत अनुभव है।

इस स्फटिक एवं ज्ञान ज्योत जैसे पर्वत के आगे न कोई मंदिर, न कोई मूर्ति और न कोई पुजारी है। यहाँ दिशाओं की दीवालें हैं और आकाश का गुंबज है । साकार भी यही और निराकार भी यहीं है । न कोई मंत्र, न कोई तंत्र, कौन पूजा करेगा ? किस प्रकार से पूजा करेगा ? क्या भेंट चढाएगा ? समस्त ब्रह्मांड के सृजनहार जिसके पास सब कुछ है उसे क्या दे सकेंगे ?

आदि से अंत तक सत्यम, शिवम, सुन्दरम्।

मानसरोवर की समुद्र सतह से ऊँचाई **14,500** फुट है। मानसरोवर की गहराई **300** फुट है। इसका क्षेत्रफल **200** वर्ग मील एवं वृत्त **54** मील है । इसका आकार नर कंकाल सुपारी जैसा है । प्रातः, सुबह, मध्याह्न, सन्ध्याकाल एवं रात्रि में प्रकृति के स्वरूपों के साथ-साथ मानसरोवर का सौंदर्य दर्शन बदलता रहता है।

यह मानता है कि ब्रह्मा ने अपनी मनोशक्ति द्वारा यह सरोवर उत्पन्न किया है। संस्कृत भाषा के प्राचीन महाकवियों की प्रेरणा स्वरूप मानसरोवर प्रत्येक दृष्टि से अवर्णनीय है। मानसरोवर की एकमात्र बूँद आपके पिछले सात जन्मों के पाप धोने के लिए बहुत है, तब इसमें शरीर डुबोने पर सोचो कितना धन्य-धन्य होगा, इसका जो अनुभव करेगा उसे ही समझ में आएगा

बर्फ से ढ़की चट्टानों की छाया को समेटे हुए विशाल सरोवर, नजर जाए वहाँ तक उसका शुद्ध स्फटिक जल एवं उसे पास दिखायी दे रहे छोटे-छोटे पत्थर..... हजारों वर्षो से मौन पानी में पड़े हुए..... शिव की प्रसादी स्वरूप यह शिवलिंग मानो लेते ही रहें ..... लेते ही रहें ।

कैलाश मानसरोवर की यात्रा में 'कैलाश पर्वत तथा मानसरोवर की परिक्रमा' यह मुख्य ध्येय है । पूजनीय वस्तु को बाईं और रखकर सत्य की दिशा में घूमने की प्रक्रिया को परिक्रमा कहते हैं। तिब्बेतियनों की मान्यता के अनुसार यात्रीगण कैलाश के बाहर की ओर खड़े होकर प्रदक्षिणा करते हैं, जबकि सिद्ध पुरुष ही कैलाश पर्वत के बिलकुल अंदर वाले मार्ग में सूक्ष्म आधार से प्रदक्षिणा करते हैं ।

नीलवर्णी आकाश में गगन चुंबी कैलाश की सतह भगवान के त्रिनेत्र, जटा एवं जटा में से निकल रही गंगा देखने से अवतार धन्य हो जाता है। मानो अब जीवन में कुछ भी देखना बाकी न रहा हो ऐसी भावना आती है।

अनुवादकर्ता

जिग्नेश सोयंतर
निरीक्षक

श्रीमती अनुपमा मुन्जाल
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

जीवन का तूफान

जीवन में एक तूफान आया है,
जो नफरत और
सिर्फ नफरत लाया है ।
चारों तरफ है अपमान की गर्जना
और
शुरु होगी शायद अप्रीति की वर्षा ।
नष्ट हो रहे हैं
मेरे सुनहरे सपने
बैर, की इस काली आंधी में ।
छुप गया है सूरज
द्वेष के अंधेरे में ।
मन में एक भय है अनिष्ट का,
सहारा नहीं है तनिक सा ।
चमन में वीराना, न कोई ठोर ना ठिकाना,
अकेले ही इस, तूफान को सहना है ।
कभी तो घटेंगे पर ये काले बादल,
होगा उजाला स्नेह का ।
अविरल बहते हैं अभी आंसू
गिरते हैं निर्मोह के इस दायरे में,
खुशी क्या होती है
भूल गयी हूं जबसे
जीवन में एक तूफान आया है ।

सुश्री कविता भटनागर
उपायुक्त

''गुजरात वैभव''

अपनी सुव्यवस्था के लिए,
गुजरात हो गया भारत में विख्यात ।
दिन की बात क्या है,
रात है गुजरात की विख्यात ।
यहाँ परस्पर है नहीं लड़ाई - झगड़ा,
रहते हैं हम सब मिलकर प्रेम से ।
करते हैं परस्पर गुजराती में बातचीत,
यह है इनकी अपनी पुरानी रीति ।
मिष्ट - भाषी है विश्वासी हैं,
करते नहीं विश्वास - घात ।
नेता हैं समाज-सेवी,
इन्होंने जीत लिया जनता का विश्वास ।
जीवन के सब साधन हैं प्राप्त,
ईश्वर भक्ति में पूरी आस ।
बिजली-पानी की नहीं कोई कमी कभी,
करते सभी सुपाच्य प्रातः - राश ।
करते आपस में सद्व्यवहार,
करते नहीं किसी प्रकार का दुर्व्यवहार ।
सड़कें हैं चौड़ी - वन वे ट्रैफिक,
नगर व बाहर है वन - वे ट्रैफिक सुमार्ग ।
नगर में भव्य उच्च अट्टालिकाएँ हैं,
सभी प्रकार से साधन-संपन्न ।
लिफ्ट से मिनटों - सेकेन्डों में,
सभी जाते ऊपर - नीचे
बड़े-बड़े विशाल बाजार है,
यहाँ सभी वस्तु हैं सुलभ ।
यदि पैसा पास है,
तो कोई वस्तु नहीं दुर्लभ ।

नगर में होटलों की भरमार है,
जो जनता की सेवा करते मन से ।
नगर व राज्य में बड़े-बड़े कारखाने हैं,
जिनमें श्रमिक काम करते हैं लगन से ।
मनो-विनोद के साधन खूब हैं,
जनता का मनोरंजन करते मन से ।
बड़े-बड़े चिकित्सालय हैं,
जिनमें जनता का इलाज होता सुविधा से ।
कर्णावती थी इस प्रदेश की राजधानी,
नहीं है कोई नगर इसका सानी ।
काम मिलता है खूब लोगों को,
नहीं रहता कोई खाली ।
खुश हैं, सुख - संपन्न हैं,
खूब है..... हरियाली ।
महात्मा गाँधी की जन्म स्थली,
पोरबंदर है, साबरमती आश्रम कर्मस्थली ।
टंकारा में जन्मे ऋषि दयानन्द,
जो हैं आर्य - जनों की तीर्थस्थली ।
सरदार पटेल-लौह पुरुष थे रक्षा मंत्री,
ग्राम समद है उनकी जन्म - स्थली ।
तीर्थ - स्थल हैं इस प्रदेश में,
द्वारिका और सोमनाथ ।
कर्म-शील हैं लोग इस प्रदेश के,
प्रभावित नहीं होते प्राकृतिक आपदा से ।
रहे कृपा इस प्रदेश पर घनश्याम की,
यही विनती है अकिंचन राधेश्याम की ।

राधेश्याम गुप्त 'विशारद'
पिताश्री : सुधीर कुमार, अपर आयुक्त

इतिहास की काली रात में

इतिहास की काली रात में
उग्र द्वंद की करुणा गाथ में
जब भारत की हम बात करें
निर्झर नयनों के साथ करें।

आ जाओ पंजाब में
जहाँ हो रही थी होली
रक्त के लाल रंग मे
नहा रही थी जनता भोली।

कश्मीर भी नहीं रहा अछूता
स्वर्ग जो कहलाता था
अब भारत-पाक का कुरुक्षेत्र बना
धरती ने इसे कब जना।

राजाओं के स्थान में
गुलाबी नगर की आन में
हिंदू लड़ा, मुस्लिम लड़ा
दुकाने जलीं, मकान जला
इसमें किसने क्या खोया
और इसमें किसको क्या मिला।

दिव्य शिखा की ज्योतिर्मय वाणी
ओजयुक्त थी वह प्रिय गुणखानी
दिल्ली का वह राजभवन
बना अब श्मशान मगर
84 की थी वह कहर
इन्दिरा की बन गई समाधि
शहीद की पा ली उपाधि।

इतिहास की कालीरात में
जब भारत की हम बात करें
निर्झर नयनों के साथ करें।

श्रीमती अभिलाषा फणीभूषण
पत्नी-फणीभूषण, निरीक्षक

बुद्धि परखने का नया मापदण्ड
''स्पिरिच्यूअल इन्टेलिजन्स''

1. बुद्धि परखने का नया मापदण्ड अब बदल गया है । वैज्ञानिकों का कहना हैं कि ''आई.क्यू.'' का मतलब इन्टेलिजन्स क्वोशन्ट और ''ई.क्यू.'' का मतलब ईमोशनल क्वोशन्ट है जिसके द्वारा व्यक्ति की बुद्धि मापी जा सकती थी । इस ''क्यू'' की श्रृंखला में एक नया ''क्यू'' शामिल हो गया है । इस नए ''क्यू'' अर्थात् ''एस.क्यू.'' का मतलब ''स्पिरिच्यूअल क्वोशन्ट'' है । मनुष्य की बुद्धि प्रतिभा परखने में ''एस.क्यू.'' भी महत्व का भाग निभाता है । ऐसे लोग अल्टिमेट इन्टेलिजन्ट होते हैं । प्रतिभा का अर्थ यह है कि अपनी बुद्धि में नई - नई विचारधाराएँ बहती रहें ।''

2. बीसवीं सदी की शुरुआत में ''आई.क्यू. टेस्ट'' (इन्टेलिजन्स क्वोशन्ट यानि कि बुद्धिमत्ता) बुद्धि मापने का मापदंड था, जिसका जितना आई.क्यू. ज्यादा होता है, वह उतना ही अधिक बुद्धिशाली है - ऐसा कहा जाता था । आज तक अधिक आई.क्यू. धारक बालक को बुद्धिशाली मानते थे किन्तु 1995 में हावर्ड यूनिवर्सिटी के मनोवैज्ञानिक हेनियल गोलमेने ने अपनी किताब ''सोशल इन्टेलिजन्स'' में ''ई.क्यू.'' (इमोशनल क्वोशन्ट यानि कि भावनात्मक योग्यता) का सिद्धांत में बताया है कि मनुष्य की भावनात्मक क्षमता यह तय करती है कि उसकी मानसिक योग्यता का उपयोग किस तरह किया जा सकता है । जिनका ई. क्यू. जितना अधिक मजबूत होता है, वे लोग जीवन में उतनी ही अधिक सफलता प्राप्त करते हैं इसलिए सिर्फ ''आई.क्यू.'' टेस्ट में प्राप्त अंको को मनुष्य की बौद्धिक योग्यता का मापदंड नहीं माना जा सकता है ।

3. ''स्पिरिटच्यूअल इन्टेलिजन्स'' - ''अल्टिमेट इन्टेलिजन्स'' वर्ष 2000 में, ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी के मनोवैज्ञानिक ''डाना जोहर'' और ''इयान मार्शल'' ने ''एस.क्यू.'' (स्पिरिच्यूअल क्वोशन्ट) द्वारा बुद्धि परखने का नया सिद्धांत दिया । उन्होंने बताया कि ''स्पिरिच्यूअल इन्टेलिजन्स'' जीवन के मूल्यों और उसके महत्व को समझाने में सहायक सिद्ध होने की बुद्धि है, जिसके द्वारा हमलोग अपने कृत्य (एक्शन्स) बेहतर, विस्तृत एवं अर्थमय बना सकते हैं । अपने आप में झांक सकते हैं कि ''जिंदगी के दिए हुए अनेक मार्गों में से अपनी दृष्टि से श्रेष्ठ मार्ग कौन सा है ? - यही ''अल्टिमेट इन्टेलिजन्स'' है ।

4. एक और मनोवैज्ञानिक ''सिंथिया एवं डेविसन'' का कहना है कि ''एस.क्यू.'' धारक व्यक्ति आत्मिक एवं आध्यात्मिक रुप से अधिक जागृत होते हैं । ''एस.क्यू.'' आत्मज्ञान का श्रेष्ठ मार्ग है । ऐसे व्यक्ति अपने - आप में रखी सूक्ष्म, अदृश्य क्षमताओं को पहचानने की शक्ति रखते हैं । प्रत्येक प्रकार की बुद्धि जितनी विशिष्ट है उतनी ही साधारण भी है । इसका बीज हर किसी के मन में रहता है । ऐसे बीज का उचित लालन - पालन करके वृक्ष की भांति हरा एवं समृद्ध वृक्ष बनाया जा सकता है ।

5. ''स्पिरिच्यूअल इन्टेलिजन्स'' की पहचान -

1. विनम्र होना ।
2. अपने - आप के लिए जागृत होना ।
3. तनाव का सामना करने की क्षमता रखना ।
4. किसी के विचार से प्रेरित होने की क्षमता रखना ।
5. विविध प्रकार की समस्याओं को हल करके निर्णय लेने की क्षमता रखना ।
6. मूलभूत सवाल पूछने की क्षमता रखना ।
7. रूढिवादी रिवाजों के विरुद्ध कार्य करने की क्षमता रखना ।

श्री जोहर एवं श्री मार्शल ने अपनी पुस्तक ''स्पिरिच्यूअल इन्टेलिजन्स'' एण्ड अल्टिमेट इन्टेलिजन्स में एस.क्यू. के बारे में कई वैज्ञानिकों के मापदंड की चर्चा की है । 1990 में कैलिफोर्निया युनिवर्सिटी के न्यूरो साईकोलोजिस्ट श्री माइकल परसिन्गर और न्यूरोलोजिस्ट श्री बी.एस. रामचंद ने मस्तिष्क में छिपे हुए गॉडस्पॉट को ढूँढ निकाला है । यह बिंदु (स्पॉट) मस्तिष्क के टेम्परिल लॉब के पास है । मस्तिष्क की स्केनिंग के दौरान वैज्ञानिकों को यह जानकारी मिली है कि ''व्यक्ति से जब भी आध्यात्मिक सवाल पूछे जाते हैं तो मस्तिष्क के अंदर छिपे हुए ''गॉडस्पॉट'' तब यह प्रकाशमान हो जाता था । वैज्ञानिक जिसे ''गॉडस्पॉट'' कहते हैं वे ईश्वर के अस्तित्व का समर्थन नहीं करते हैं, किन्तु वे यह संकेत देते है कि जीवन के इस गूढ़ रहस्य को जानने के लिए मस्तिष्क संवेदनशील है ।

6. ''स्पिरिच्यूअल इन्टेलिजन्स'' का विकास -

''स्पिरिच्यूअल इन्टेलिजन्स'' का विकास नीचे बताए अनुसार किया जा सकता है :-

1. आत्मा के प्रति जागृत बनना - जैसे कि आंतरिक कौशल्य का बिकास करना, संबंध बढ़ाना, कला प्रेमी एवं कृति प्रेमी बनना, मधुर संगीत सुनना एवं भावनाओं को व्यक्त करना ।
2. स्वयं का विश्लेषण यानि की आत्म - विश्लेषण करना, सामयिक पढ़ना एवं डायरी लिखना।
3. आप जो परिवर्तन चाहते हों, अपने इन विचारों को ज्यादा मजबूत बनाना ।
4. समस्याओं के लिए सोचना एवं उनपर विचार करना ।
5. सही मार्ग को चुनना किन्तु कुछ परिस्थितियों या हालातों मे आए परिवर्तन के लिए हमेशा तत्पर एवं तैयार रहना ।
6. संभावनाओं को ढूँढना ।
7. आत्मिक शक्तियों पर ध्यान केन्द्रित करना ।

योगेश शाह
अधीक्षक

हल्की सी मुस्कान

एक दिन, खुद से बहुत ही नाराज
बहुत ही दु:खी, बहुत ही हताश चली मैं ।

घर से निकल पड़ी, पता नहीं किधर की ओर,
थोड़ी इस दुनिया से नाराज चली मैं ।

थोड़ी अपने आप को, थोडा अपने मन को,
शांत करने चली मैं ।

आगे जाकर, एक गली में कुछ बच्चों को देखा,
उनको मस्ती करते देख उनकी ओर चली मैं ।

उनमें एक बच्चा देखा, जिसने देख मुझे,
दी हल्की सी एक मुस्कान ।

देख उसकी मुस्कान हुई मैं हैरान,
जान न पहचान, फिर भी एक मुस्कान ।

लौटाई उसको मैने भी एक, छोटी सी मुस्कान
और आगे निकल चली मैं ।

लिए इस मुस्कान को आगे चली मैं,
उस मुस्कान को जिस - जिस ने देखा,
लौटाई सभी ने एक - एक छोटी सी मुस्कान ।

इन्ही मुस्कानों से मेरे दिल को मिला चैन,
मन को सुकून और शांति ।

लेकर इस एहसास को,
पलटकर घर की ओर चली मैं
राह मैं सबको मुस्कान देती चली मैं ।

घर पहुँचते - पहुँचते मेरी
छोटी - सी मुस्कान बन गई,
बड़ी - सी मुस्कान ।

तब मुझे समझ में आया,
सारे दु:खों का राज़ कि,
मनुष्य हो गया है इतना व्यस्त,
कि मुस्कुराना ही भूल गया है ।

चलो हम सब मिलकर आज,
यह प्रण करें मस्कुराने का,
कोई भी पल न गँवाए मुस्कुराने का ।

श्रीमती लवली गर्वासिस
निरीक्षिका

नव वर्ष

नई नवेली दुल्हन जैसी, सजी-धजी सी नई सुबह,
सूरज की किरणें भी मानो, भूल चुकी हों कोई कलह ॥

पहले पग का स्वागत करने, बाँह पसारे नव वर्ष खड़ा,
अधरों पर अपने मुस्कान समेटे, छुपा रहा है, राज बड़ा ॥

कहता है जी भर, जी लो मुझको, गिन लो मेरी सारी धड़कन,
मत रोको भावों को अपने, कर लो जो कहता है मन ॥

त्यागो दुर्बल सारी बातें, दृढ़ता का तुम थामो सम्बल,
आसमान को बाँहों में, भरने की इच्छा तुम करो प्रबल ॥

सौभाग्य रहे साथ आपके, हों पूर्ण कार्य हर एक,
नव वर्ष, की इस बेला पर यही शुभकामना देता अभिषेक ॥

अभिषेक बाजपेयी
भाई - श्रीमती अर्चना मिश्रा
कनिष्ठ हिन्दी अनुवाद

गरीबी - एक दूषण या श्राप ?

हमारा देश एक बहुत ही बड़ा देश है और हमारे देश की कुल आबादी 100 करोड़ से अधिक है। हमारे देश में काफी गाँव हैं जिन्हें दो प्रकारों में विभक्त किया जा सकता है - बड़े गाँव एवं छोटे गाँव। भारत की आबादी के अधिकतर लोग गाँवों में ही रहते हैं और खेती - बाड़ी का काम करके अपना और अपने परिवार का भरण-पोषण करते हैं। इसमें से छोटे गाँवों की परिस्थिति और भी ज्यादा खराब है - न आमदनी का कोई साधन है, न ही बिजली या सिंचाई की कोई व्यवस्था। खेती - बाड़ी करे भी तो कैसे करें पानी की भी भयंकर समस्या है। सरकार इन सभी समस्याओं पर ध्यान देती है पर जितना ध्यान देना चाहती है उतना नहीं दे पाती है। जिन लोगों को वास्तव में जरुरत है उन तक वास्तव में राहत पहुँचती ही नहीं है। गाँव की परिस्थिति दिखाने वाले कई कार्यक्रम टी.वी. पर भी आते हैं। श्रीमंत लोग गाँव के गरीब लोगों का शोषण करते हैं। बनावटी दस्तावेज बनाकर गरीब लोगों की संपत्ति पर कब्जा कर लेते हैं और गरीब रो- रोकर अपना जीवन बिताते हैं। उनके पास खाने के लिए दाना भी नहीं होता और चिंता में वे अपना जीवन भी समाप्त कर लेते हैं। गाँव की स्थिति बहुत ही खराब है। अब इसे दूषण कहे या श्राप कहें - यह एक बड़ा प्रश्न है। जब हमें इस विषय में पता चलता है तो हमें बहुत दुख होता है। गाँव में गरीब लोग रहते हैं। जरुरत के अनुसार बारिश नहीं होती और दूसरी भी बहुत सारी समस्याएँ दिखाई पड़ती हैं।

यह बात तो गाँव की हुई। शहर में भी गरीब लोग रहते हैं, जो मज़दूरी करके अपना गुजारा करते हैं। बड़े शहर में तो गरीब लोग रास्ते में फुटपाथ पर रात गुजारते हैं। मांग कर खाते हैं, न रहने के लिए झोपड़ी होती है न पहनने के लिए कपड़े। उनके बच्चे नंगे घूमते हैं। कई बार माँगने पर भीख भी नहीं मिलती और उन्हें भूखे ही सोना पड़ता है। जब भी हम रास्ते से निकलते हैं और फुटपाथ पर उन्हें देखते है तो हमे अजीब सा दृश्य दिखाई देता है। हम कुछ भी नहीं कर पाते क्योंकि ऐसे सैंकड़ों - लाखों लोग ऐसी ही गरीबी में अपना जीवन बिताते हैं। इन गरीबों में से कितने ही इतनें वृद्ध होते हैं जो न तो मजदूरी करने जा सकते हैं न ही माँगकर खा सकते हैं और उनके परिवार के सदस्य जो कुछ भी माँग कर लाते हैं उसमें से कुछ रुखा - सूखा खाकर अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

इन गरीब लोगों के लिए हम क्या कर सकते हैं ? यह एक सोचनेवाली बात है। जैसे वृद्ध लोगों के लिए वृद्धाश्रम बनते हैं वैसे ही गरीब लोगों के रहने लायक भी आश्रम/संस्था बनाए जाने चाहिए। बिल्डर लोग बड़े-बड़े कॉम्पलेक्स बनाते हैं इन गरीबों के लिए कुछ नहीं करते। यह समाज की जिम्मेदारी है कि जरुरतमंद लोग, जो कुछ काम नहीं कर सकते और जो काम करने के लिए सक्षम है उनके लिए अलग-अलग सुविधाएँ/कार्यक्रम तैयार करें, तथा संगठित होकर सरकार के सामने बात रखें। गरीब लोगों की कौन मदद करेगा ? यह हमारे समाज में रहनेवाले लोगों की ही जिम्मेदारी है। एक छोटा सा समूह बनाकर योग्य व्यक्ति को योग्य कार्य सौंपकर थोड़ा चंदा इकठ्ठा करे निष्टापूर्वक कुछ करना चाहें, तो कुछ भी कर सकते हैं। एकता होनी चाहिए। यदि हममें एकता होती तो यह गरीब का दूषण मिटा सकते हैं और इस गरीबी के श्राप को दूर कर सकते हैं। अपने मन में ऐसा कुछ करने का संकल्प करें तो इतना ही काफी है। किसी को भीख माँगना अच्छा नहीं लगता पर यह उसकी मजबूरी है और इस मजबूरी का फायदा उठाना ठीक नहीं है। चलो हम सब मिलकर कुछ कर दिखाए और गरीबी के दूषण को समाप्त या नष्ट करने की कोशिश करें।

ए. वी. जोशी
प्रशासन अधिकारी (मु.)

क्या खोया और क्या पाया?

बात उठे जब मंथन की खुद में, खुद की आवाज सुनो,
फिर बैठ धरा पर शांत कहीं, नयन मूंदे कुछ होंठ रुंधो,
पृष्ठों को खुद खोलो अपने, जिसमें जीवन सार लिखा,
वक्ता बन जीवन काटा, हर पृष्ठ को अपने आप लिखा ।
अब स्रोता बन धैर्य धरो, तुला-तराजू पास धरो,
पैमाने ताने जो अब तक सब पर, खुद भी उसको ग्रहण करो,
किससे छीना ? किसमें बाँटा ? हिसाब का अब समय है आया,
फिर पूछो खुद से, अब तक, क्या खोया और क्या पाया ?

कुछ समय तो यूं ही बीत गया, बचपन का आँचल थामे,
बालपन या लड़कपन क्या नाम दिया था उसको जाने,
किशोरी सी एक बेला में मन में नाजुक विचार बने,
ना बचपन का आँचल था वो ना यौवन ही उसको माने ।
यौवन की एक देहरी पर गुरुर बढ़ा, कुछ मान बढ़ा,
तूफानों से लड़ने की ताकत, हिमालय सा विश्वास बढ़ा ।
नित-नए सपनों की रचना, सब पाने की चाह बढ़ी,
क्या कुछ तुमने कर डाला ? क्या था उसमें गलत सही ।
किसको सींचा ? किसको काटा ? किसे ठुकराकर किसे अपनाया?
फिर पूछो खुद से, अब तक, क्या खोया और क्या पाया ?

कितने आँसू पोंछे तुमने ? कितने होंठो की मुस्कान बने ?
कितनी चाहत में सच्चाई थी ? किसके दिल के अरमान बने ?
कितनी आँखे रोई तुमसे ? कितने होठ सिले हैं तुमने ?
अपने दिल को बहलाने को कितने दिल तोड़े हैं, तुमने ?
मद गुरुर की उस ताकत में, कितनी रचना ? कितना विध्वंस भरा था ?
नैन मूंद के सोचो उसमें, कितना मन से कितना अनमना था ?

कुछ रचना का आधार धरा ? या ख्वाबों में ही महल बनाया ?
फिर पूछो खुद से अब तक क्या खोया और क्या पाया ?

वो जीवन तो सफल बड़े हैं, जो इसका उत्तर पा जाते हैं ?
सच्चाई का पलड़ा है भारी, सबको सबक दे जाते हैं ।
जो अब तक उत्तर ढूँढ़ रहे हैं, कुछ कमी कहीं पर लगती है
जीवन यूँ ही बीत गया, ये बात उन्हें भी खलती है ।
पूछ रहे हैं अब भी खुद से, क्यों खुद को भरमाया ?
इतना जीवन काटा फिर भी, क्या खोया और क्या पाया ?

श्रीमती अर्चना मिश्रा
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

हमारे बच्चे

बच्चे हर आँगन में उजाला देने वाले दीप हैं । बच्चे जगत में सुनहरे पुष्प हैं । बच्चे हर आँगन की खुशियाँ हैं । इन्सानी जीवन में सबसे अच्छा समय है - ''बचपन ।'' बच्चे बचपन में निर्दोष एवं भोले होते हैं ।

स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू जी को बच्चे बहुत ही प्रिय लगते थे । इसलिए प्रत्येक 14 नवम्बर को उनका जन्मदिन, 'बालदिवस' के तौर पर मनाया जाता है । बच्चे सही रूप से मन के सच्चे होते हैं । बच्चों में बड़ा ही मासूम दिल होता है ।

पर अभी, नज़र डालो तो चारों ओर अखबारों में हम यह पढ़ते रहते हैं कि - बच्चे गायब, बच्चों का व्यापार, बाल मजदूरी, छोटा बच्चा मार दिया गया आदि जैसी सुर्खियाँ आ रही हैं और अब यह कोई नयी बात नहीं रही है । इस देश में बच्चे तक सुरक्षित नहीं हैं जोकि आगे देश का भविष्य एवं देश चलाने वाले हैं । ऐसे बच्चे स्वतंत्र भारत में भी असुरक्षित हैं ।

सभी अपना फर्ज एवं नीति-नियम भूल चुके हैं । अपनी ही धरती पर अपने बच्चे सुरक्षित नहीं रहे, यह बहुत ही निन्दनीय एवं घृणास्पद बात है ।

आइए एक साथ जुट होकर नया भारत बनाएँ जहाँ अपने बच्चे सलामत रहें ।

दीपक एस. पटेल
निरीक्षक

एक प्रेरक प्रसंग

यह प्रसंग फ्रांस देश का है। पेरिस के एक बड़े प्रसिद्ध बैंक में लूट की गई। लुटेरों ने आदमियों की हत्या की ओर बहुत ही सफाई से वहाँ से भाग निकले। पेरिस के काबिल पुलिस अफसरों ने गुनहगारों को पकड़ने की बहुत कोशिश की लेकिन नाकामयाब रहे। बाद में, इस चोरी का मामला एक सुप्रसिद्ध डीटेक्टिव जो "शेरलोक होम्स ऑफ फ्रांस"के नाम से जाने जाते थे, उनको सौंपा गया। यह डीटेक्टिव अपना कार्य हमेशा पूरी लगन, निष्ठा और ईमानदारी से करता था। वे बड़े हिम्मतवान और अच्छे देशभक्त भी थे। इस डीटेक्टिव ने अपनी जाँच चालू की और थोड़े ही दिनों में खतरनाक डाकुओं को मुख्य सरदार के साथ पकड़ लिया। उसने मामले को इतना मजबूत बनाया कि सरदार को फांसी की सजा और बाकी गुनहगारों को उम्र कैद की सजा मिली।

इस डीटेक्टिव की एक और खासियत थी कि आज तक जितने भी मामले तैयार किए थे, उनमें ज्यादातर गुनहगारों को फांसी की ही सजा मिलती थी और जब भी किसी गुनहगार को फांसी की सजा दी जाती, उस समय यह डीटेक्टिव अचूक रुप से हाजिर रहते थे। इस मामले में भी मजिस्ट्रेट साहब, सरकारी वकील, अन्य कर्मचारीगण के साथ फांसी की पूर्ण तैयारी करके नियत तारीख और समय पर फांसी देनेवाली जगह पर हाजिर हो गए। डीटेक्टिव हमेशा फांसी लगने में दो मिनट बाकी होती, तब आ जाते थे। लेकिन आज वे नहीं आए थे और गुनहगारों के सरदार को फांसी उनकी गैर-मौजूदगी में ही दी गई। सब लोग बाहर आ गए थे। मजिस्ट्रेट साहब डीटेक्टिव के बहुत ही अच्छे दोस्त थे। उनके मन में प्रश्न भी आया कि आज डीटेक्टिव क्यों नहीं आए। इस घटना के बाद भी डीटेक्टिव कहीं नहीं दिखाई दिए। दुनिया से कहीं दूर गायब हो गए। पूरे देश में थोड़े दिनों तक लोग चर्चा करते रहे कि क्या डाकुओं ने उनकी हत्या की होगी या अपहरण किया होगा। बाद में सबलोग भूल गए।

अब मजिस्ट्रेट साहब निवृत्त हो चुके थे। लेकिन जब भी कोई ऐसी घटना बनती वे अपने डीटेक्टिव दोस्त को जरुर याद कर लेते थे। एक दिन सुबह की चाय पीते समय अपने पते पर लिखे हुए खतों को पढ़ रहे थे तब एक लिफाफे पर परिचित अक्षर दिखाई दिए। उन्होंने तुरंत उस लिफाफे को हाथ में लिया और उसमें से खत निकालकर पढ़ना शुरु किया, जो इस प्रकार था -

''मेरे प्रिय दोस्त, मजिस्ट्रेट साहब,

आज से कई बरस पहले पेरिस की एक बैंक में लूट की गई थी, यह आपको याद होगा। उस लूट और खून के आरोपियों को आपने ही सजा सुनाई थी। उस मामले की जाँच मैंने ही की थी और सभी गुनहगारों को पक़डकर आपके सामने लाने वाला डीटेक्टिव मैं ही था लेकिन उस समय दी गई फांसी की तारीख से आजतक लापता रहा हूँ। मै आज ऐसे गाँव में अपनी जिंदगी बिता रहा हूँ जहाँ मुझे डीटेक्टिव से पहचाननेवाला कोई नहीं है। आपको यह ताजुब्ब हुआ होगा कि उस मामले की सफलता मेरी प्रगति में चार चाँद लगा देती। फिर भी मैं लापता क्यों हुआ? आज मैं बूढ़ा हो गया हूँ मेरे मरने का समय भी नज़दीक है इसलिए मरने से पहले अपना रहस्य अपने एक अच्छे दोस्त को बताना चाहता हूँ। जिस सरदार गुनाहगार को पकड़कर मैंने देश के कानून को सौपा था वह मेरा इकलौता बेटा था, जिसको आपने फांसी की सजा सुनाई थी। मैंने सारी जिंदगी अपनी वफादारी से राष्ट्र की सेवा की। लेकिन मेरे बेटे ने राष्ट्रविरोधी कार्य किए जो मेरे लिए सहन करना मुश्किल हो गया था और मैं अपने राष्ट्र के प्रति अपने आखिरी फर्ज को निभाकर अंधेरे में चला गया। आज अपनी जिंदगी के अंतिम दिनों में आपको मित्र समझकर यह खत लिख रहा हूँ।

धड़कते दिल के साथ आँखों में आँसू लाकर मजिस्ट्रेट ने खत पढ़ना पूरा किया। आखिर में उनके हस्ताक्षर थे।

आपका मित्र
हेनरी भातूर

संकलनकर्ता - डोरिया विपिनचंद्र एन.
वरिष्ठ कर सहायक (निवारक)

विपत्तियां मनुष्य को न दुर्बल बनाती हैं न सबल वे तो केवल यह प्रकट करती हैं कि वह क्या हैं।

- अज्ञात

जीवन

मत करो अभिमान तुम अपने जीवन का ।
खेल ये तो सिर्फ आवागमन का ॥

मत करो अभिमान अपने जीवन का ।
खेल ये तो सिर्फ आवागमन का ॥

पतलून ब्रांडेड पहने न फूले समाओ,
साड़ी-डिज़ाइनर ड्रेस पहने न खिल-खिलाओ,
पहन लो ये कीमती परिधान लेकिन,
वस्त्र अंतिम एक है तेरे कफन का ।

मत करो अभिमान अपने जीवन का ।
खेल ये तो सिर्फ आवागमन का ॥

पहुँचा नीचे से कोई ऊपर कहाँ तक,
कोई चला ऊपर से और पहुँचा धरा तक,
रास्ते अच्छे - बुरे हैं अनगिनत पर,
रास्ता अंतिम है तेरे कब्र का ।

मत करो अभिमान अपने जीवन का ।
खेल ये तो सिर्फ आवागमन का ॥

जब आएगा ये ज़लज़ला भूमि के ऊपर,
और सागर में सुनामी की ये आफत,
आसमाँ से कैटरीना का कहर हो,
तब आखिरी आधार है ईश्वर शरण का ।

मत करो अभिमान अपने जीवन का ।
खेल ये तो सिर्फ आवागमन का ॥

जे. एस. रामदेवपुत्रम
अधीक्षक

एक राष्ट्र एक भाषा - राजभाषा हिन्दी

किसी भी राष्ट्र के लिए चार बातें बहुत जरुरी होती हैं -

1. राष्ट्रगीत
2. राष्ट्रध्वज
3. राष्ट्रचिन्ह, और चौथी और अहम बात जो है, वह है,
4. राष्ट्रभाषा

राष्ट्रभाषा वह होती है जो देश के हर प्रदेश के व्यक्तियों को एक दूसरे के साथ जोड़ती है, वह पुल की भांति है जो दो किनारों का मिलाप करवाती है । ऐसी ही राष्ट्रभाषा हमारे देश को भी मिली दिनांक : 14-09-1949 को ।

भारत के संविधान को बनानेवाले एवं भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में जिन लोगों ने अपना बलिदान दिया उन सभी लोगों की दिल से इच्छा थी कि यदि भारत को एक करना है, एक सूत्र में बाँधना है तो वह काम केवल हिन्दी ही कर सकती है । महात्मा गांधी, सरदार पटेल ने पूरे भारत की परिक्रमा कई बार की, लोगों को संगठित किया और भारत को आजादी दिलाई, उस वक्त हिन्दी भाषा ही एकमात्र माध्यम थी महात्मा गांधी ने हिन्दी के बारे में कहा था कि '-हिन्दी सिर्फ राष्ट्रभाषा नहीं परंतु हमारी मातृभाषा भी है'' ।

भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने यू.एन.ओ. (UNO) में जब हिन्दी भाषा में भाषण दिया तब दुनियाभर के समाचार पत्रों ने उसका विशेष उल्लेख किया । आज हिन्दी यू.एन.ओ. की कई स्वीकृत भाषाओं में से एक है । ऐसी महान भाषा को हम नहीं समझेंगे तो कौन समझेगा ? आज के कम्प्यूटर युग में जब सॉफ्टवेयर का बोलबाला है तब यह बात कहनी जरुरी हो जाती है कि कम्प्यूटर की सबसे सहूलियत भरी भाषा अंग्रेजी नहीं पर हिन्दी है, यह बात वैज्ञानिक तौर पर सिद्ध हो चुकी है ।

भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी जी ने भी कहा था कि, हिन्दी हमारे रग-रग की भाषा है और सच्चे हिन्दुस्तानी की भाषा है । हमारे एक देशभक्ति के गीत में भी हमने यही गान गाया है कि हिन्दी है हम, वतन है हिन्दुस्तान हमारा । ऐसी हमारी राष्ट्रभाषा एवं मातृभाषा हिन्दी को लाख-लाख सलाम ।

जय भारत, जय हिन्दी ।

संजय आर. शुक्ल
निरीक्षक

वासनाओं से अलग रहकर जो कर्म किया जाता है, वही सुकर्म है ।
- वृन्दावनलाल शर्मा

पंद्रह अगस्त के अक्षरों का अर्थ

प - पवित्रता बढ़ती जाय

न्- न्याय से हर काम हो

द्र - द्रव्य के लोभी ना बने

ह - हनन हो देश के दुश्मनो का

अ - अमन चैन हो देश में

ग - गतिमान रहे जनता

स्- स्नेह हो आपस में

त - तट तभी मिलेगा

उपर्युक्त वाक्यों को सिर्फ याद ही रखने की जरुरत नहीं है बल्कि इसे कार्यरूप देने की जरुरत है, ताकि हम आज के इस ग्लोबल विश्व में कदम से कदम मिला कर चल सकें और अपने सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं नैतिकता की नई ऊँचाइयो को सफलता पूर्वक प्राप्त कर अपने तिरंगे का सम्मान बढ़ाने का प्रयत्न करें ।

अमित कुमार
कर सहायक

''सभी भाषाएँ हमारी संस्कृति की धाराएँ हैं जो एक साथ मिलकर भारतीय चिंतन और परंपरा की विशाल नदी का निर्माण करती हैं। हमें अपनी इज़्ज़त, अपने राष्ट्रीय सम्मान के लिए अपनी राष्ट्रभाषा (हिन्दी) का प्रयोग करना चाहिए ।''

-डॉ. शंकरदयाल शर्मा

''भारतीय भाषाएँ नदियाँ है और हिन्दी महानदी''

-रवींद्रनाथ टैगोर

साहसी महिलाओं द्वारा स्कूटर यात्रा

हर वर्ष दिनांक 02 अक्टूबर से 10 अक्टूबर तक ''वन्य जीवन सप्ताह'' के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर समाज में जीवन के प्रति जागरूकता बढ़ाने हेतु दिनांक 30-9-2006 से दिनांक 02-10-2006 तक की अवधि के लिए वन विभाग के सहकार से भारतीय युथ होस्टल संस्था के अहमदाबाद (मुख्य) युनिट ने महिला सदस्यों के लिए 326 कि.मी. लंबी (अहमदाबाद - नल सरोवर - वेलावदर - अहमदाबाद) स्कूटर यात्रा का आयोजन किया, जिसमें 14 साहसी महिलाओं ने हिस्सा लिया । इस स्कूटर यात्रा में मेरे साथ 20 से 48 साल की आयु की महिला सदस्याएँ जिसमें डॉक्टर, वकील, प्रोफेसर, शिक्षक और विद्यार्थी शामिल थीं । युथ होस्टल एसोशिएशन एक अंतरराष्ट्रीय संस्था है, जिसकी स्थापना रिचार्ड शिरमन नामक जर्मन शिक्षक ने सन् 1912 में की थी । आज विश्व के 62 देशों में यह संस्था फैली हुई है । यह संस्था लोगों से साहस और पर्यावरण के प्रति जागरुकता बढ़ाने के लिए कार्यरत है ।

पहला दिन :-

दिनांक 30-09-2006 शनिवार के दिन अहमदाबाद के वस्त्रापुर में स्थित वनचेतना केन्द्र से दोपहर 3.50 बजे हमारी साहसयात्रा शुरु हुई । इस यात्रा को वरिष्ठ वन अधिकारी श्री प्रदीप खन्ना (पीसीसीएफ, वाइल्ड लाइफ) ने फ्लेग ऑफ किया । हम 13 महिलाएँ स्कूटर पर और एक विद्यार्थिनी बाईक पर सवार थी और हमारे वाहनों पर पर्यावरण से संबधित सूत्र लिखे हुए थे । हमारे वाहनों के पीछे बाईक पर यूथ हॉस्टल के श्री मौलिक शाह तथा कार में मिकेनिक के साथ श्री दीपक मारू भी आ रहे थे । वनचेतना केन्द्र से शुरु होने के बाद सरखेज - साणंद रोड से होकर 4.35 बजे हम साणंद पहुँचे जहाँ पर युथ होस्टल, साणंद युनिट के सदस्यों ने हमारा स्वागत किया । साणंद से शाम को 5-00 बजे अपने वाहन द्वारा हम नल सरोवर की ओर चल पड़े और 6.15 बजे हम वहाँ पहुँच गए । इस तरह पहले दिन की 64 कि.मी. की यात्रा पूरी हुई।

नल-सरोवर, अहमदाबाद और सुरेन्द्रनगर जिले के बीच में स्थित गुजरात का सबसे बड़ा सरोवर है। इस सरोवर का कुल विस्तार 120 चौ.कि.मी. है, जिसे सन् 1969 के अप्रैल मास में अभ्यारण्य घोषित किया गया । ऐसा भी कहा जाता है कि, इस सरोवर का पौराणिक पात्र नल और दमयंती से जुड़ा हुआ है । यह अभ्यारण्य भारत के श्रेष्ठ जल - पंछी अभ्यारण्यों में से है जहाँ पर मध्य एशिया, यूरोप और साईबिरीया से माईग्रेटरी पंछी अक्टूबर से अप्रैल के बीच में आते हैं ।

नल - सरोवर के किंनारे पर ही 'फ्लेमिंगो' नामक वन विभाग का गेस्ट हॉउस में हमारा रैनबसेरा था। इसलिए हमें यहाँ पर तरह - तरह के पंछियों को नजदीक से देखने का मौका मिला । यहाँ हमने सूर्यास्त का अद्‌भुत दृश्य देखा । सूरज को धीरे-धीरे सरोवर के पानी में डूबता हुआ महसूस किया ।

दूसरा दिन :-

दिनांक 01-10-2007 रविवार के दिन सुबह जल्दी उठकर, तैयार होकर हम सब दो नावो में बैठकर नल सरोवर की सैर के लिए निकल गए । हमारे साथ वन-अधिकारी श्री उदय वोरा भी आए थे । उन्होंने हमे पक्षियों की जानकारी दी । सरोवर में हमने पेलिकन्स, जलमुर्गी, किंगफिशर, कोरमोरेट फ्लेमिंगो, क्रेन, स्टोक, स्पूनबील, हेरोन आदि पक्षी देखे । पानी में छोटी - छोटी मछलियाँ भी देखी ।

नल - सरोवर से 9-00 बजे हम लोथल होकर बलावदर जाने के लिए निकले । रास्ते में एक जगह हम रूके और हरियाली जमीन पर सारस क्रेन और ईग्रेट नामक पंछी देखे और एक छोटे से तालाब में बहुत सारे कमल के फूल भी देखे । नजदीक में खेत में एक किसान के केश की मदद से पानी निकालकर

सिंचाई करते हुए देखा । ऐसा नजारा देखने के बाद 11-30 बजे हम लोथ पहुँचे । नल-सरोवर लोथल से 50 कि.मी. की दूरी पर है ।

लोथल अहमदाबाद जिले के धोलका तालुका में स्थित है । गुजराती शब्द लोथ+थल से यह नाम बना है, जिसका मतलब मृतको का स्थल । लोथल सिंधु संस्कृति का हिस्सा है, जिसका उद्‌भव काल ईसा पूर्व 2350 माना जाता है ।

लोथल में हमने वहाँ स्थित म्यूजियम देखा और लोथल की पुरानी संस्कृति के अवशेष भी देखे, जिसमें ईटों से बना एक स्थापत्य जो उस जमाने का बंदरगाह था, जो करीब 700 फुट लंबा, 110 फुट चौड़ा और 10 फुट गहरा था । यह सब देखने के बाद दोपहर 1-00 बजे हमारी सवारियाँ निकल पड़ी और धोलेरा होकर दोपहर को 2-30 बजे तक 70 कि.मी. की दूरी तय करके हम वेलावदर पहुँच गए । वहाँ पहुँचते ही हमने भोजन किया ।

वेलावदर का 34 चौ.कि.मी. का वन प्रदेश जुलाई 1976 में राष्ट्रीय उधान घोषित किया गया जो गुजरात के चार राष्ट्रीय उद्यानों में से एक है । यह उद्यान परवालिया और अलंग नदी के बीच में फैला हुआ एक घास प्रदेश है, जिसमें कालियार, हिरण, एवं नीलगाय बसते हैं । उसके एक हिस्से में छोटा सा जलीय प्रदेश है जहाँ तरह-तरह के पंछी दिखाई देते हैं । यहाँ सर्दी के मौसम ने मध्य यूरोप से हजारों की तादाद में हेरयर्स नामक पंछी आते हैं ।

वहाँ पर उद्यान के अंदर ही वन-विभाग के गेस्ट हॉउस में हमारा पड़ाव था । गेस्ट हाउस के करीब ही हमने कालियार (ब्लैक बक), नीलगाय, और हिरणों को घास खाते हुए देखा । कुछ जगह पर ऊँची घास के अंदर बैठे हुए कालियार के सिर्फ दो सिंग "V" आकार में दिखते थे जो बहुत अच्छा दृश्य था । हिरणों की पीठ के ऊपर ड्रागा नामक पंछियों को बैठे हुए देखा । थोड़ी देर बाद ताजा होकर वन विभाग के अधिकारियों के साथ हम अभ्यारण्य सैर करने निकले जहाँ हमने तरह-तरह की वनस्पति और पेड़ देखे । सैर से वापस आते-आते रात के 7-00 बज चुके थे । उस वक्त गेस्टहाउस के पास एक नीलगाय भी आई थी, जो हमारे रात के खाने और सोने के वक्त भी साथ-साथ थी ।

तीसरा दिन :-

दिनांक 02-10-2006 सोमवार के दिन सुबह जल्दी उठकर तैयार होकर 6-30 बजे हमने अपनी वापसी यात्रा शुरू की । वापसी यात्रा के दौरान एक जगह पर रास्ते के किनारे कुछ समय के लिए हम रूके क्योंकि वहाँ एक तालाब में कई सारे पंछी दिखाई दिए । वहाँ हमने दूरबीन की मदद से तरह-तरह के पक्षियों का अवलोकन किया । तालाब के नजदीक में एक खेत में बड़ी तादाद में कोमन क्रेन नामक पक्षियों को देखा। वहाँ पर हमने युथ हॉस्टल के बैनर के आगे खड़े रहकर ग्रुप तस्वीर खिंचवाई । बाद में, धोलेरा, धोलका और कलिकुंड होकर 142 कि.मी. का अंतर पूरा करके हम 12-30 बजे अहमदाबाद के शारदामंदिर स्कूल में पहुँचे जहाँ पर उपस्थित समूह ने जोरदार तालियाँ बजाकर हमारा स्वागत किया । बाद में स्कूल के होल में ''युथ होस्टल'' द्वारा प्रमाण पत्र देकर हमारा सम्मान किया गया । वर्तमान पत्रों के पत्रकारों द्वारा हमारा साक्षात्कार भी किया गया । तद्‌पश्चात् भोजन के बाद स्कूटर यात्रा की सुहानी यादों के साथ हम विसर्जित हुए।

यह यात्रा मेरे लिए एक अविस्मरणीय और रोमांचक अनुभव देने वाला साहस था ।

रूपा के. याज्ञिक
पत्नी : के. एम. याज्ञिक
अधीक्षक

सोचता रहा !

मैं पगला न जाने क्या-क्या सोचता रहा ?
ये मुझे क्या हो रहा है ? सोचता रहा !
किस मोड़ पर तुम बिछड़ गए ? सोचता रहा !
कब किस मोड़ पर तुम मिले थे ? सोचता रहा !
अब इस मोड़ पर क्या करूं ? ये सोचता रहा !
क्या जिंदगी तुम बिन गुजर जाएगी ? सोचता रहा !
ये सोचकर रूह कांप गयी, ये सोचता रहा !
तुम्हारे बिना मैं जिन्दा क्यों हूँ ? ये सोचता रहा !

मनोज कुमार शर्मा
अधीक्षक

पूज कभी इन्सान को

ईश्वर में है सच्ची श्रद्धा तो, पूज कभी इन्सान को,
जिसके अंश को पूज सके ना क्या पूजेगा उस भगवान को ।
हर गलियों में मिल जाएँगे भूखे, नंगे प्यारे बच्चे,
जो ईश्वर के रूप हैं होते सीधे-सादे अच्छे-सच्चे ।
जो उनकी भूख मिटा सकता तू ढ़क सकता जो उनके तन को,
तो है तू सच्चा पुजारी तू ही पाएगा भगवन को ।

जो सच्ची है तेरी श्रद्धा जो है तेरी सच्ची उपासना,
तो उठ मानव तू कर ले आज मानव की एक बार वन्दना ।
जो पढ़ा सकता है सबको सच्ची समता का तू पाठ,
सार्थक तभी होंगे ऐ मानव ! तेरे फेरे एक सौ आठ ।
बीत गया सो भूल जा मानव ले खुद को अब भी तू चेत,
कुछ भी हाथ नहीं आता जब चिड़िया चुग जाती है खेत ।

देवभूषण मिश्रा
कर सहायक

मेरी साइकिल यात्रा

इंसान जीवन में कई प्रकार की यात्रा करता है। यदि यात्रा का कोई खास हेतु हो तो उसका महत्व काफी बाढ़ जाता है। ऐसे ही एक उम्दा हेतु से आयोजित साइकिल यात्रा का अनुभव मैं प्रस्तुत करना चाहता हूँ।

पर्यावरण के प्रति जागरूक एवं देश-विदेश में जिनकी ख्याति ऐसी प्रतिष्ठित संस्था ''यूथ हॉस्टेल'' द्वारा दिनांक 24-2-2007 को अहमदाबाद (थलतेज) से थोल पक्षी अभ्यारण्य तक साइकिल यात्रा का आयोजन किया गया। इस साइकिल यात्रा का मूल हेतु पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाना था। इसमे 7 साल से लेकर 60 साल तक की उम्र के साइकिल यात्रियों ने भाग लिया। इस साइकिल यात्रा में भाग लेने वाले हरेक के दिल में पर्यावरण के प्रति प्रेम और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता छलक रही थी।

दिनांक 24-02-2007 को ठीक समय 4-00 बजे, 60 साइकिल यात्रियों के साथ इस साइकिल यात्रा का प्रारंभ हुआ। लगभग सभी साइक्लिों पर कोई न कोई पर्यावरण संबंधित सूत्र थे, जैसे कि वन्यजीवों का रक्षण करें ''पानी बचाएँ'', ''प्रदूषण निवारण के लिए साइकिल का प्रयोग'' आदि। शिष्टबद्ध तरीके से सभी साइकिल यात्री थलतेज से शीलज गाँव होते हुए, सरदार पटेल रिंग रोड पार करके ग्राम्य विस्तार में दाखिल हुए। गाँव की हरियाली, चहकते पक्षियों की आवाज के बीच हम आगे बढ़ रहे थे। लगभग 1 घंटे बाद हमने राँचडा गाँव पर छोटा सा विराम लिया, वहाँ ''यूथ हॉस्टेल'' के स्वयं सेवकों द्वारा नींबू - शरबत एवं नाश्ते का आयोजन किया गया था।

काफी दिनो बाद मैंने साइकिल चलाई थी, इसलिए थोड़ी थकावट लग रही थी, किंतु साथ आए छोटे बच्चों और 60 साल के बुजुर्गो को देखकर मेरा उत्साह बढ़ा और हम फिर चल पड़े हमारी मंजिल की ओर थोल गाँव से होकर हम कलोल हाईवे से दाहिनी और मोड़से थोल तालाब की ओर चल पड़े। उस मोड़से थोल तालाब की दूरी 2 कि.मी. है। कुल मिलाकर 24 कि.मी. साइकिल चलाकार हम शाम 6-30 बजे थोल पक्षी अभ्यारण्य पहुँच गए। शाम को घर लौटते पक्षियों को देखकर और उनकी आवाज सुनकर मन प्रफुल्लित हो गया। वहाँ हमारा रहना टेन्ट में था, एक टेन्ट में 8 से 10 लोग थे, जिसमें बच्चे एवं बड़े सभी थे। वहाँ रात को भी हमने बहुत सारी प्रवृत्तियाँ की, जैसे कि केम्प फायर, नाईट ट्रेक, तालाब की चाइनावाल जैसी दीवार पर धूम का मजा और शांत होकर दूर से आ रही आवाजों को सुनना आदि। वहाँ सभी के साथ मिलकर खाना खाना एवं

बाँटकर खाने की बात मुझे बहुत अच्छी लगी । रात को 12-00 बजे तक सभी खेले और बहुत कुछ सीखे ।

सुबह 6-30 बजे उठकर पक्षी देखने गए । वहाँ हमने बहुत सारे पंछी जैसे कि पेलिकन्स, जलमुर्गी, किंगफिशर, कोरमोरेट, फ्लेमिंगो, क्रेन आदि और जमीन के पंखी जैसे कि रोजी पोस्टर, फ्रीसंट टीटोडी और शकरा, ड्रेंगो भी देखे । पक्षियो के अपने अंदाज एवं उनकी कलाबाजी को देखकर सभी दंग रह गए । वहाँ से वापस आकर चाय-नास्ता किया एवं जंगल के अधिकारियों के साथ मिलकर थोल तालाब को ज्यादा जानने की कोशिश की ।

वहाँ से सुबह 10 बजे अहमदाबाद जाने के लिए निकले । रास्ते में डाभला गाँव के पास पांजरापोल की मुलाकात ली । यहाँ पर बीमार पशुओं को रखा जाता है । इस पांजरापोल के पीछे के हिस्से की खुली जमीन पर मृत पशुओं को रखा जाता है । इस पांजरापोल के पीछे के हिस्से की खुली जमीन पर मृत पशुओं को निकाल लिया जाता है, वहाँ पेड़ों पर बैठे गिद्ध देखे, जिनमें इजिप्तियन गिद्ध, पीठवाला गिद्धेवं सामान्य गिद्ध थे । आज गिद्ध को लुप्त हो रही जाति में रखा गया है । रास्ते में एक ठहराव किया और ठीक 11-30 बजे हम अहमदाबाद पहुँचे, हमारा वहाँ उपस्थित लोगों ने अभिवादन किया और भावनामय दृश्य सृजित हुए । समाचार पत्रों ने इस साइकिल यात्रा का उल्लेख किया और उसे पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ानेवाला बताया । पर्यावरण के प्रति ऐसी जागरूकता बढ़ाने के लिए सदैव तैयार रहने का प्रण लेकर यह साइकिल यात्रा समाप्त हुई, जिसकी स्मृति सदैव मेरे मन में ताजा रहेगी । आइये हम सब भी पर्यावरण को हरा-भरा एवं रहने लायक बनाने में अपना योगदान दें ।

संजय आर. शुक्ल
निरीक्षक

"हिन्दी एक संगठित करनेवाली शक्ति है । हिन्दी का प्रचार कार्य एक वाज्यज्ञ है ।"

- काका साहिब गाडगिल

"हिन्दी हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक व्यवहार में आनेवाली भाषा है ।"

- राहुल सांकृत्यायन

'ली' का कमाल

ऐसे प्रश्न जिसके उत्तर के अंत में 'ली' है ।

1.	एक प्रसिद्ध शहर/देश	– इटली
2.	सलाद में खाई जाती है	– मूली
3.	एक हिट फिल्म	– जूली
4.	क्रिकेट जगत का एक महान खिलाड़ी	– हेडली
5.	खाना बनाने का एक बर्तन	– पतीली
6.	सांपों में पाई जाती है	– केंचुली
7.	अक्सर मोटे लोगों को कहते हैं	– रोली-पोली
8.	ईसा मसीह को इस पर चढ़ाया गया था	– सूली
9.	जीजा की होती है	– साली
10.	एक सीरियल का नाम	– मिली
11.	दो हाथों से बजती है	– ताली
12.	भारत की राजधानी	– दिल्ली
13.	इससे तेल निकलता है	– मूंगफली
14.	बीबी को कहते हैं	– घरवाली
15.	खट्टी होती है	– इमली
16.	बीचवाली को कहते हैं	– मंझली
17.	कानों में पहनते हैं	– बाली
18.	सड़क का एक और नाम	– गली
19.	बंदूक में होती है	– गोली
20.	मुंबई में छोटे मकान / झोपड़ी को कहते हैं	– खोली
21.	बाग लगाने वाला	– माली
22.	गालों पर लगाते हैं	– लाली
23.	खाना जिसमें खाते हैं	– थाली
24.	हिंदुओ का त्यौहार	– होली/दिवाली

संकलकर्ता – श्रीमती अर्चना मिश्रा
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

क्या आप जानते हैं ?

1. कि ए.के-47 बन्दूक में ए.के. का अर्थ अवटोमैट कैलाश्नीकोव होता है, जिसका अर्थ स्वचालित कारतूस है ।
2. कि हिटलर को फ्यूहरेर के नाम से भी जाना जाता था ।
3. कि सबसे अधिक हथियार निर्यात करनेवाला देश अमरीका है ।
4. कि रैफ्लेशिया इस संसार का सबसे बड़ा फूल है ।
5. कि विश्व में सबसे तेजी से वृद्धि करनेवाला पौधा मटर कूल का पौधा ''एलविजिया फैलकाटा'' है ।
6. कि उल्लुओं के समूह को पार्लियामेन्ट कहते हैं ।
7. कि दरियाई घोड़े में पुरुष ही बच्चे को जन्म देता है ।
8. कि जेना (xena) नामक ग्रह की खोज ने प्लूटो से ग्रह होने का दर्जा छीन लिया ।
9. कि मोरारजी देसाई, चरणसिंह, वी.पी.सिंह, पी.वी.नरसिम्हा राव और एच.डी. देवगौड़ा ऐसे मुख्यमंत्री रहे जो आगे चलकर प्रधानमंत्री भी बने ।
10. कि ऐरिक वेन हेमाएर एक अंधा था जिसने एवरेस्ट विजय प्राप्त की ।
11. कि भारत का सबसे पुराना विश्वविद्यालय कलकत्ता विश्वविद्यालय है, इसकी स्थापना 24 जनवरी 1857 को हुई ।
12. कि मिर्च का तीखा स्वाद 'कैप्सीन' नामक रसायन के कारण होता है ।
13. कि चीनी लोग बिना दूध के ही चाय पीते हैं ।
14. कि जर्मनी के विश्वप्रसिद्ध संगीतकार एल.वी. वीथोवेन बहरे थे ।
15. कि ब्रिटेन के संसद को संसदों की जननि कहा जाता है ।
16. कि मैक्सिको में चांदी का सिक्का चलता है ।
17. कि 'Taxi' शब्द अंग्रेजी, जर्मन स्पेनी तथा फ्रांसीसी भाषाओं में एक सा ही लिखा जाता है ।
18. कि झण्डों के अध्ययन का शास्त्र वेक्सिलोलॅजी कहा जाता है ।
19. कि दो अलग-अलग महादेशों पर स्थित विश्व का एक मात्र शहर इस्ताम्बुल है ।
20. कि डोमिनिका, मेक्सिको, जाम्बिया, कीरीबाटी, फिजी तथा मिश्र ऐसे देश है जिनके झण्डों पर पक्षियों का चित्र है ।
21. कि आयरलैड एक मात्र ऐसा देश है, जहाँ पवन चक्कियाँ घड़ी की सुई की दिशा में चलती है ।
22. कि लियोनार्दो दा विंशी एक साथ एक हाथ से लिख और दूसरे हाथ से चित्र बना सकता था ।
23. कि भारत में चौबीस लाख से अधिक पूजन-स्थल हैं ।
24. कि असम को ''असोम'', भोपाल को ''भोजपाल'', उत्तरांचल को ''उत्तराखंड'', बैगलोर को बैगलूरू के नाम से जाना जाने लगा है ।

संकलनकर्ता - देवभूषण मिश्रा
कर सहायक

खेलों का राजा – ''पर्वतारोहण''

कोई माने या ना माने पर पर्वतारोहण को खेलों का राजा कहा जाता है। इस बारे में कुछ ठोस कारण भी हैं। पर्वतारोहण एक ऐसा खेल है जो प्रकृति के साथ खेला जाता है। इस खेल का ध्येय होता है पर्वत की चोटी पर पहुंचना। दूसरे खेलों के मूल में स्पर्धा होती है जिसके जरिए पहला, दूसरा और तीसरा स्थान पाया जाता है। जबकि पर्वतारोहण में स्पर्धा को जरा भी स्थान नहीं दिया जाता है। एक ऐसा खेल है जिसमें सहकार और संघभावना को सबसे ऊँचा स्थान दिया गया है। दो या दो से ज्यादा पर्वतारोही एक दूसरे की मदद करते हुए पर्वत की चोटी की ओर बढ़ते हैं और अंत में सहकार और संघभावना के जरिए चोटी तक पहुँच पाते हैं। इस दरम्यान कोई ऐसा नहीं सोचता कि कौन सबसे पहले चोटी पर पहुँचेगा। इस तरह सबसे पहले या सबसे बाद में ऊपर पहुँचने की बात का कुछ भी महत्व नहीं है। इस खेल में सभी को जिताने की भावना है।

तेनसिंग नोरगे और एडमड हिलेरी ने सन् 1953 के मार्च महीने की 29 तारीख को सबसे पहले एवरेस्ट की चोटी पर कदम रखे थे। एक भेंट वार्ता में से एक प्रश्न ऐसा भी पूछा गया था कि ''तुम दोनों में से सबसे पहला कदम एवरेस्ट की चोटी पर किसने रखा था ?'' इसके जवाब में उसने कहा कि हम लोग जब ऊपर पहुँचे तो हमारे मन में यह बात ही नहीं आई थी कि सबसे पहला कदम कौन रखेगा क्योंकि पर्वतारोही कभी स्पर्धा नहीं करता है। चोटी तक पहुँचने में हम दोनों का बराबर हिस्सा रहा है क्योंकि हमें एक दूसरे का सहकार न मिलता तो हम में से कोई भी वहाँ नहीं पहुँच पाता।

संघभावना तो पर्वतारोहण के मूल में ही है क्योंकि , पर्वतारोहण के जो आवश्यक नियम बनाए गए हैं उनमें से एक यह है कि पर्वतारोहण कभी अकेले नहीं करना चाहिए।

के. एम. याज्ञिक
अधीक्षक

अनर्थ अवसर की ताक में रहते हैं।

– **कालिदास**

इन्सान या हैवान ?

भगवान ने होकर दयावान
दिया हमें जीवन का दान
दी हमें मनुष्य की योनि
किन्तु हम न बन पाए इन्सान।

मनुष्य ही बना मनुष्य का बैरी
मनुष्य ने ही की मनुष्य से हेरा - फेरी
मनुष्य ने ही मनुष्य को सताया
मनुष्य ने ही मनुष्य को रूलाया।

नर हो या नारी हो
अपने कर्मों से हमने
न केवल अपनों का दिल दुखाया
इन्सानियत के नाम पर भी कलंक लगाया।

भगवान के वरदान का किया अपमान
हम न बन पाए इन्सान
कुकर्मों के बोझ ने
बना दिया हमें निष्ठुर, हैवान।

श्रीमती अनुपमा मुन्जाल
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

विपत्ति मनुष्य को विचित्र साथियों से मिलाती है।

- शेक्सपियर

गरीबी ना सही गरीब हटाओ !!

एक दिन सड़कों पर,
दिखने लगी पुलिस - भरी गाड़ी,
काम क्या था ?
सड़कों के किनारे से हटाओं भिखारी ।

माज़रा क्या है ? कुछ समझ न आया,
पूछ ही बैठा एक भिखारी,
"साहब ! क्या है गलती हमारी ?
क्यों किस्मत पड़ी है हम पर भारी ?"
सवाल से जैसे साहब की तंद्रा टूटी
दिया जवाब भी बड़े ताव में --
"किस्मत तो तुम सबकी फूटी
आए जिस दिन इस दुनिया में ।"

ए.सी. मोटरकार, भवन की ऐश न लूटी,
तो क्या देखा तुमने दुनिया में ?
जीते हो तुम सब क्या ?
कुचले जाने के अरमान में ।

फिर कहा साहब ने ताव में आकर --
जानना चाहते हो क्यों हटाया जा रहा है तुम्हें ?
क्योंकि भारत पर कलंक है तुम्हारी बिरादरी ।
क्या सोचेंगे वे ? जब 'बुश' की जाएगी सवारी ?
सोचो क्या रह जाएगी "इज्जत" हमारी ?

इसलिए सरकार ने सोचा यह कारगर उपाय,
भूखमरी न सही, भूखों को हटाया जाए ।
तभी, सहसा उठा वह भिखारी !
बढ़ने लगा अंधकार की ओर,
पूछा किसी ने उससे - "कहाँ जाते हो भाई ?"
चिल्लाया वह - "जाने दो मुझे ! जाने दो !"
"भारत की इज्जत बचाने की अब है मेरी बारी ।"

सुश्री दीप्ति शरण
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

अन्तर साहित्य दर्शन

जिन्दगी (गुजराती)

श्वास उच्छवास ना झीणा तातणे
क्यां सुधी झुलती रहेशे ज़िन्दगी

जोने ओढी दुपट्टो तन्हाई नो
सुख थी शरमाई रही छे ज़िन्दगी

दर्द नो एहसास हवे क्यां रह्यो
दर्द थी जीवती रही छे ज़िन्दगी

लाश आ दिल नी हवे क्यारे पड़े
मृत्यु ने पूछती रही छे ज़िन्दगी

आ हृदय नी ऊंडी तिराड़ो मही थी
याद तारी खोतरी रही छे ज़िन्दगी

क्यां गयो ? खुदज हुँ खोवायो गयो
ढूँढ़ती मुझने फरे छे ज़िन्दगी

काल सुधी जे हती तारी 'विशाल'
आज ए पारकी बनी छे ज़िन्दगी

जे. आई. वोहरा
अधीक्षक

जिन्दगी (हिन्दी)

श्वास - उच्छवास के झीने ताँतों पर
पर कब तक झूलती रहेगी ज़िन्दगी

देखो ओढ़कर दुपट्टा तन्हाई का
सुख से शरमा रही है ज़िन्दगी

दर्द का अहसास अब कहाँ रहा
दर्द पीकर जी रही है ज़िन्दगी

लाश इस दिल की अब कब गिरेगी
मृत्यु से पूछ रही है ज़िन्दगी

इस हृदय की गहरी दरारों में से
याद तुम्हारी कुरेद रही है ज़िन्दगी

कहाँ गया ? खुद ही मैं खो गया !
ढूँढ़ती मुझे घूम रही है ज़िन्दगी

कल तक जो थी तुम्हारी 'विशाल'
आज वह परायी हुई है ज़िन्दगी

अनुवादकर्ता
प्र. डी. डावरा
सहायक निदेशक

सत्य को न देखने के कारण ही यह संसार जला है, इस समय जल रहा है और जलेगा ।

- अश्वघोष

अन्तर साहित्य दर्शन

मुक्तक (गुजराती)

काँच पर पड़े तिराड समु आ काव्य
ने सूकी धरती नी किराड़ समु आ काव्य
थोर बनी उगी निकल्यु छे कागड़ पर
हृदय मां पड़ेल चिराड समु आ काव्य

शुं ज़िन्दगी ने मौतमां आज फेर छे ?
के बन्ने समय जुदी जातना पेय छे ?
जीवता रहे छे झेर दुनिया तरफथी
ने मौत वक्ते तो ए गंगा जल छे

वितेला दिवसो ने आवो आजे ताजा करीए
ने संग्रही राखेली ने फरीथी वागोल्ये
घणा समय पछी मल्या छो आज तमे
आवो साथे बेसी, बेचार घड़ी, दिल टाढ़ा करीए

जे. आई. वोहरा
अधीक्षक

मुक्तक (हिन्दी)

काँच पर पड़ी दरार सा यह काव्य
और सूखी धरती की दरार सा यह काव्य
थोर बन कर उपज निकला है कागज़ पर
हृदय में पड़ी दरार सा यह काव्य

क्या ज़िन्दगी और मौत में यही फरक है ?
या दोनों वक्त भिन्न प्रकार के ये पेय हैं ?
जीते मिलता है ज़हर दुनिया की ओर से
और मोत के समय ये गंगा जल देते हैं

बीते हुए दिनों को आओ आज ताज़ा करें
और संग्रह की गई यादों को फिर से दोहराएँ
लम्बे समय बाद मिले हो आज तुम
आओ साथ बैठकर दो घड़ी दिल को शाँत करें

अनुवातकर्ता
प्र. डी. डावरा
सहायक निदेशक (राजभाषा)

यह संपत्ति क्या है ? केवल कुछ चीजें, जिन्हें तुम इस भय से कि इनकी कल तुम्हें जरूरत पड़ सकती है, संचित करते हो और जिनकी रखवाली करते हो ।

– **खलील जिब्रान**

जागा सपना है

आज तुम्हारे ना आने से
दिन कितना धुंधला धुंधला है
ना आँखो में
कोई चमक है
मौसम भी भीगा भीगा है

आज तुम्हारे ना आने से
कुछ भी समझ
नही आता है
क्या करना क्या
ना करना है
हर पल तुम ही तुम हो
मन में
आँखों मे जागा सपना है

आज तुम्हारे ना आने से
ना जाने क्या सोच रहा हूँ
जीवन के एकांत क्षणों में
सांसे भी
भारी भारी हैं
जब से मन
तुम से बिछड़ा है
आज तुम्हारे ना आने से

अजीत आर. सिंह
निरीक्षक

फूल और कांटा

ऐसा नहीं
कि मुझे फूलों से प्यार नहीं
कोमल पंखुड़ियों से,
उजले रंगों से
भला कौन सम्मोहित नहीं होता ?
पर पता नहीं क्यों
फूल से अधिक आकर्षित करता है
मुझे उपेक्षित कांटा ।
पौधे की सुरक्षा में
बन जाता है, सबके लिए भयावह
सहता है सदैव कटाक्ष
पर
जिस फूल के लिये, वही फूल
उसकी और देखता कभी नहीं,
मुँह करता है,
अपने प्रशंसकों की ओर ।
रहता फिर भी
अडिग है, तुच्छ कांटा
मिट जाता है
फूल को बचाने के लिए
कोई पर देखता नहीं
उसका त्याग, कोई पर सोचता नहीं
यह बात
फूल दो दिन का मेहमान
न निभा पायेगा साथ,
ये तो कांटा ही है,
जो रहेगा दुःख में भी साथ ।

सुश्री कविता भटनागर
उपायुक्त

हिन्दी दिवस/सप्ताह का आयोजन - वर्ष 2006

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, नई दिल्ली के कार्यालय ज्ञापन सं. 1/14034/2/87 रा.भा.क. 1 दिनांक 21-04-1987 (परिपत्र सं. 2/1987) के अनुसरण में पिछले वर्षों की भाति इस वर्ष भी हिन्दी दिवस, 14 सितंबर, 2006 के अवसर पर इस आयुक्तालय में दिनांक 22-09-2006 से 29-06-2006 तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया ।

2. उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए :-

(क) कार्यालय का सारा काम हिन्दी में करने का प्रयास किया गया ।

(ख) हिन्दी सप्ताह के दौरान सभी कार्यालयों में हिन्दी के प्रचार संबंधी पताकाएँ, बैनर आदि प्रमुख स्थानों पर प्रदर्शित किए गए ।

(ग) इस संबंध में आयुक्तालय स्तर पर निम्नलिखित प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया ।

(1) हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता

(2) हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता

3. उपर्युक्त प्रतियोगिताओं में प्रथम पाँच स्थान प्राप्त करने वाले सफल प्रतियोगियों को क्रमशः रु 1700/-, रु 1400/-, रु 1200/- रु 1000/- एवं रु 800/- के और दो सांत्वना रु 600/- की दर से नकद पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए ।

4. उपर्युक्त प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत प्रतियोगियों के नाम नीचे बताए अनुसार हैं :-

(क) हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता

क्रम सं.	अधिकारी/कर्मचारी का नाम व पदनाम	स्थान	राशि रू.
1	श्री प्रदीप कुमार शर्मा, निरीक्षक	प्रथम	रु 1700/-
2	श्री पी. एल. पंचाल, निरीक्षक	द्वितीय	रु 1400/-
3	श्री नीरज पाल, निरीक्षक	तृतीय	रु 1200/-
4	श्री अनिल एस. धनवाणी, निरीक्षक	चतुर्थ	रु 1000/-
5	श्री प्रेम राज मीणा, निरीक्षक	पंचम	रु 800/-
6	श्रीमती बीना जानी, वरिष्ठ कर सहायक	सांत्वना-I	रु 600/-
7	श्री एम. सी. ब्रह्मभट्ट, कर सहायक	सांत्वना-II	रु. 600/-

(ख) हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता

क्रम सं.	अधिकारी/कर्मचारी का नाम व पदनाम	स्थान	राशि रू.
1	श्री नीरज पाल, निरीक्षक	प्रथम	रु 1700/-
2	श्री पी. एल. पंचाल - अधीक्षक	द्वितीय	रु 1400/-
3	श्री प्रदीपकुमार शर्मा, निरीक्षक	तृतीय	रु 1200/-
4	श्री आर. जे. परमार, अवर श्रेणी लिपिक	चतुर्थ	रु 1000/-
5	श्री प्रेम राज मीणा, निरीक्षक	पंचम	रु 800/-
6	श्री एम. सी. ब्रह्मभट्ट, कर सहायक	सांत्वना-I	रु 600/-
7	सुश्री नाज़िमा शेख, निरीक्षक,	सांत्वना-II	रु. 600/-

5. समापन समारोह :

हिन्दी दिवस/सप्ताह समापन समारोह का आयोजन 15 दिसम्बर, 2006 को केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, अहमदाबाद-II के सम्मेलन कक्ष में आयोजित किया गया । आयुक्त महोदय श्री के. आर. भार्गव जी के कर-कमलों से सफल प्रतियोगियों को नकद पुरस्कार एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए गए । इस अवसर पर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन भी किया गया ।

संकलनकर्ता - आर. जे. क्रिश्चियन
अवर श्रेणी लिपिक

भूल गया

सागर देखा तो पानी, भूल गया ।
पहाड़ देखा तो चट्टान, भूल गया ।
वन देखा तो हरियाली, भूल गया ।
बच्चा देखा तो बचपन, भूल गया ।
माँ देखी तो ममता भूल, गया ।
पिता देखा तो प्यार भूल, गया ।
और तुम्हें देखा तो सुबह-शाम, भूल गया ।

दीपक एस. पटेल
निरीक्षक

आइये छुट्टी यात्रा रियायत (एल.टी.सी.) को जानें

सामान्य :-

सरकारी सेवक स्वयं अपने परिवार द्वारा निष्पादित यात्रा की तिथि को एक वर्ष की नियमित सेवा पूर्ण करने के पश्चात ही दो वर्षीय खण्ड में एक बार अपने घोषित गृह नगर (होम टॉउन हेतु) तथा भारत में कहीं भी अन्यत्र चार वर्षीय खण्ड में एक बार छुट्टी यात्रा रियायत का लाभ लेने का पात्र होता है। छुट्टी यात्रा का लाभ लेने वाले कर्मचारीगण प्रत्येक वर्ष में एक बार स्वयं - अकेले गृह नगर एवं भारत में कहीं भी अन्यत्र छुट्टी यात्रा रियायत के लिए पात्र नहीं है। यह रियायत उन कर्मचारियों को अनुमत्य नहीं है जिनके पति या पत्नी भारतीय रेल या राष्ट्रीय वायु मार्ग सेवा में कार्यरत हैं।

कुछ निश्चित शर्तों के साथ परिवार का तात्पर्य पति-पत्नी, दो जीवित बच्चे/सौतेले बच्चे, माता-पिता, सौतेली माता, भाई और बहन, विवाह-विच्छेदित/परित्यक्ता अलग रह रही पुत्रियाँ, विधवा-बहन यदि पिता जीवित न हों, से है।

अग्रसारित करना :-

किसी एक ख़ण्ड के लिए रियायत को अगले खण्ड के प्रथम वर्ष के लिए आगे बढ़ाया जा सकता है। परंतु स्वयं अकेले प्रत्येक वर्ष गृह नगर के लिए छुट्टी यात्रा रियायत हेतु पात्र कर्मचारीगण ऐसी यात्रा को आगे बढ़ा सकते हैं।

अग्रिम राशि :-

अनुमानित व्यय का 90% आने-जाने का अलग-अलग तथा एक साथ अग्रिम रुप में प्राप्त कर सकता है।

पात्रता :-

वायु/रेल मार्ग यात्रा :

मूल वेतन रु 18400/- और अधिक : वायुमार्ग से साधारण वर्ग में किसी राष्ट्रीय विमान सेवा।

आइये चिकित्सा - सुविधा को जानें

अहमदाबाद में बहुत से क्षेत्र केन्द्रीय सरकार स्वास्थ्य सेवा योजना के अंतर्गत आते हैं। जो क्षेत्र (सामान्यत: नगरपालिका की सीमा से बाहरी स्थान) केन्द्रीय सरकार स्वास्थ्य के अंतर्गत नहीं आते हैं वे अपना इलाज प्राधिकृत चिकित्सा परिचर से और 10 दिनों से अधिक का इलाज सरकारी अस्पताल से ए.म.ए. की सलाह पर करा सकते हैं। इलाज के बाद व्यक्ति अधिकारी चिकित्सा नियमों के अनुसार दावा प्रस्तुत करके प्रतिपूर्ति प्राप्त कर सकता है।

अस्पताल से अंत: (इण्डोर) इलाज के लिए और कैंसर जैसी बाह्य (आउटडोर) बीमारी के इलाज के लिए अधिकतम रू. 10,000 तक की अग्रिम राशि का प्रावधान है, जहाँ इलाज की अवधि तीन महीने या तीन महीने से कम हो।

यद्यपि बाई-पास सर्जरी, किडनी प्रत्यारोपण, भारी केंसर के इलाज इत्यादि जैसी बड़ी बीमारियों के मामलों में कुल खर्च का 90% तक या सरकार/सरकारी मान्यता प्राप्त अस्पताल द्वारा प्रस्तुत अनुमान (एस्टीमेट) के आधार पर इनमें जो भी कम हो अग्रिम राशि स्वीकृत की जा सकती है और बकाया राशि अंतिम समायोजन करके दी जा सकती है। टी.बी. के मामले में जिसका इलाज 3 महीने से अधिक है, उसकी अधिकतम अग्रिम राशि 36,000/- तक सीमित है या अनुमानित लागत का 80% इनमें से जो भी कम हो।

यह अग्रिम राशि सीधे संबंधित अस्पताल के फीजिशीयन/चिकित्सा अधीक्षक द्वारा अनुमानित रसीद पर दी जाएगी।

विभागाध्यक्ष को यह अधिकार है कि दुर्घटना, किसी गंभीर बीमारी इत्यादि के मालमे में आपातकालीन स्थिति में निजी अस्पताल से कराए गए इलाज के चिकित्सा दावे पर विचार करे बशर्ते कि विभागाध्यक्ष को इस पर संतोष हो एवं कुछ निश्चित शर्तों को पूरा किया गया हो।

के. देवीदासन
मुख्य लेखा अधिकारी

आइये पंचनामा को जानें

क्र.सं.	पंचों का नाम एवं पता	उम्र	पेशा
01.			
02.			

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, निवारक अनुभाग, मुख्यालय अहमदाबाद-II के निरीक्षक द्वारा बुलाए जाने पर, अपने आप को _____ को _____ बजे उपस्थित करते हैं। निरीक्षक अपना और अपने साथ आए हुए अन्य अधिकारियों का परिचय देते हैं और यह सूचित करते हैं कि उन्हें मेसर्स _____ के कार्यालय परिसर की तलाशी लेनी है। अधिकारी हम पंचो से निवेदन करता है कि इस तलाशी कार्यवाही के दौरान पंच गवाह के रूप में उस्थित रहें, जिसके लिए हम अपनी सहमति देते हैं।

अधिकारी हमें तलाशी अधिपत्र (सर्चवारंट) सं. _____ दिनांक _____ भी दिखलाता है जो सहायक आयुक्त केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, निवारक अनुभाग, अहमदाबाद-II द्वारा जारी किया गया है तथा जिस पर हम पंच अपने दिनांक सहित हस्ताक्षर करते हैं। तत्पश्चात्, उक्त केन्द्रीय उत्पाद शुल्क अधिकारीगण और हम पंच - गण मेसर्स _____ के कार्यालय परिसर पहुँचते हैं जहाँ पूछ-ताछ करने पर एक व्यक्ति आगे बढ़कर अपना परिचय उस कार्यालय इकाई के श्री _____ के रुप में देता हैं। केन्द्रीय उत्पाद शुल्क अधिकारी स्वयं को अपने साथियों को एवं हम पंचो को श्री _____ से परिचित करवाते हैं। हम पंचों की उपस्थिति में उक्त अधिकारी-गण तलाशी अधिपत्र दिखाते हैं जिसे देखने और समझने के बाद श्री _____ उस पर अपना दिनांकित हस्ताक्षर करते हैं और तलाशी की सहमति जताते हैं। कार्यालय परिसर में प्रवेश करने से पहले सभी अधिकारीगण अपनी तलाशी देंने का प्रस्ताव रखते हैं जो कि श्री _____ द्वारा अस्वीकार कर दिया जाता है।

तत्पश्चात् हम पंच लोग उन अधिकारियों तथा श्री _____ के साथ उस कार्यालय इकाई के परिसर में प्रवेश करते हैं। श्री _____ सूचित करते हैं कि वे इस इकाई में _____ के रूप में कार्य करते हैं, जो कि _____ में व्यस्त हैं और सभी _____ प्रकार के कार्य इस कार्यालय में संपन्न होते हैं।

आगे, वे सूचित करते हैं कि वह इकाई स्वामित्व संस्था है जिसका मालिक श्री _____ है। यह भी सूचित करते हैं कि सभी तैयार मालों की

बिक्री तथा कच्चे मालों की खरीद/मालों की संवेष्टी (पैकिंग) आदि से संबंधित गतिविधियाँ इसी कार्यालय परिसर में संपादित की जाती हैं ।

तत्पश्चात् हमारी और श्री _____ की उपस्थिति में केन्द्रीय उत्पाद शुल्क अधिकारी उपरोक्त कार्यालय परिसर की सुंदर एवं शिष्ट तरीके से तलाशी लेते है । अधिकारीगण तब कुछ अभिलेख/दस्तावेज को छाँट कर अलग निकालते हैं तथा उन अभिलेखों / दस्तावेजो को जो कि संलग्नक (अ) में दर्शित है, इस तर्क - संगत विश्वास के साथ ले लेते हैं कि वे अभिलेख/दस्तावेज केन्द्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम, 1944 के अंतर्गत आगे की कार्यवाही तथा खोज - बीन में प्रासंगिक तथा उपयोगी होंगे । आगे श्री _____ यह सूचना देते हैं कि उनकी वह इकाई दिनांक _____ से अस्तित्व में आई है ।

पंचनामे की कार्यविधि के दौरान कुछ भी प्रतिकूल था अवांछनीय घटित नहीं हुआ । हम सभी पंच तथा श्री _____ पंचनामा की पूरी कार्यवाही में उपस्थित रहे । पंचनामा के दौरान किसी भी तरह की कोई धार्मिक भावनाओं को चोट नहीं पहुँची । हमें अंग्रेजी भाषा का पर्याप्त ज्ञान है और यह पंचनामा हमारे कहे अनुसार श्री _____ की अनुमति से उन्हीं की इकाई में स्थापित कम्प्यूटर पर अभिलिखित किया गया है । पंचनामा हमें पढ़ कर सुनाया गया और स्थानीय भाषा में स्पष्ट भी किया गया तथा इसकी स्वीकृति के प्रतीक में इस पंचनामे के प्रत्येक पृष्ठ पर हमने अपने दिनांकित हस्ताक्षर किए हैं । वहाँ से वापस लौटने से पहले सभी अधिकारीगणों ने पुनः अपनी तलाशी देने का प्रस्ताव रखा जो फिर से श्री _____ द्वारा अस्वीकार कर दिया गया । यह तलाशी प्रक्रिया आज अर्थात् दिनांक _____ को _____ बजे समाप्त हुई ।

मेरे समक्ष, पंचो के हस्ताक्षर

निरीक्षक (निवारक), (श्री _____) 01.
केन्द्रीय उत्पाद शुल्क 02.
अहमदाबाद - II

योगेश शाह
अधीक्षक

आइए हिन्दी में काम करें

प्राप्ति :

पृ. सं. _____

मुख्य लेखा अधिकारी केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, अहमदाबाद-II से प्राप्त कार्यावकाश का अर्धवार्षिक विवरण ।

प्रस्तुत है :

श्री क ख ग, अधीक्षक, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, अहमदाबाद-II दिनांक _____ को 60 वर्ष के हो जाएंगे और दिनांक _____ को मूल नियम 56(ए) एवं भारत सरकार, कार्मिक एवं प्रशासनिक सुधार विभाग के कार्यालय ज्ञापन संख्या 25012/2/97 स्थापना (ए) दिनांक _____ में निहित आदेश के अनुसार दिनांक _____ को दोपहर बाद वार्धक्य पेंशन पर कार्यमुक्त हो जाएंगे । श्री _____ का नाम सूची के अनुसार समूह ख की क्रम संख्या _____ पर है ।

उपरोक्त सन्दर्भ में अधिसूचना जारी करनी हैं ।

अधिसूचना हस्ताक्षर हेतु प्रस्तुत है ।

वरिष्ठ कर सहायक

प्रशासन अधिकारी

अपर आयुक्त
(का.व स.)

आयुक्त

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, अहमदाबाद-II

''अधिसूचना''

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, अहमदाबाद-II के मुख्यालय के समूह 'ख' अधिकारी श्री क, ख, ग, अधीक्षक (लेखा परीक्षा) दिनांक 20-05-2007 को 60 (साठ) साल के हो जाएंगे ।

तदनुसार, वे, मूल नियम (एफ.आर.) 56 (ए) एवं भारत सरकार, कार्मिक एवं प्रशासन सुधार विभाग के कार्यालय ज्ञापन सं. 25012/2/97 स्थापना (ए) दिनांक 13-5-98 में निहित आदेश के अनुसार दिनांक 31-5-2007 को दोपहर बाद वार्धक्य पेंशन पर कार्यमुक्त हो जाएंगे ।

सेवा निवृत्त (रिटायर्ड) होने से पहले अपना केन्द्र सरकार स्वास्थ्य योजना (सी.जी.एच.एस.) कार्ड पहचान पत्र इत्यादि जमा करा दिये जाएं ।

(अ ब क)

आयुक्त, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क

अहमदाबाद-II

फा.सं. 11/25-01/2003 स्थापना

अहमदाबाद, दिनांक : 05-03-2007

प्रतिलिपि आवश्यक कार्यवाही एवं जानकारी के लिए निम्न को प्रेषित :-

1. सचिव, केन्द्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क बोर्ड, नई दिल्ली ।
2. अवर सचिव (डीडी-II), केन्द्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क बोर्ड, जीवन दीप भवन, नोर्थ ब्लॉक, नई दिल्ली ।
3. सचिव, भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, राजस्व विभाग, नई दिल्ली ।
4. मुख्य आयुक्त, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा शुल्क, वडोदरा/अहमदाबाद ।
5. सभी आयुक्त, केन्द्रीय उत्पाद, सीमा शुल्क एवं सेवा कर, गुजरात क्षेत्र ।
6. उप/सहायक आयुक्त, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, अहमदाबाद-II
7. वेतन एवं लेखा/मुख्य लेखा अधिकारी, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, अहमदाबाद-II
8. गार्ड फाइल/तैनाती फाइल/व्यक्ति विशेष ।
9. महासचिव समूह ''क'', ''ख'', ''ग'' एवं ''घ'', केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा शुल्क संघ, अहमदाबाद आयुक्तालय ।
10. महासचिव, केन्द्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क क्रेडिट सोसायटी, अहमदाबाद आयुक्तालय ।

आयुक्तालय केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, अहमदाबाद-II

फाइल संख्या अहमदाबाद, दिनांक :

मंजूरी आदेश

विषय : .....

.....

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, अहमदाबाद-II के आयुक्त/अपर आयुक्त/संयुक्त आयुक्त (का.व.स.) ने .....

.....

खरीदने के लिये रु. ...../- (रुपये .....

.....

मात्र की मंजूरी दी है ।

उक्त व्यय .....

के अनुदान से किया जाय ।

प्रशासनिक अधिकारी (मुख्यालय)
केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, अहमदाबाद-II

प्रतिलिपि प्रेषित :-

1. सहायक आयुक्त, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, ...को
   उनके पत्र फा. संख्या .....
   दिनांक ..... के संदर्भ में ।
2. मुख्य लेखा अधिकारी, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा शुल्क, अहमदाबाद-II
3. वेतन लेखा अधिकारी, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा शुल्क, अहमदाबाद-II

हिन्दी में हस्ताक्षरित पत्रों से संबंधित डायरी रजिस्टर

Diary for letter in Hindi/Signed in Hindi

प्राधिकार:- राजस्व विभाग का पत्र फा.सं. 11011/23/80-रा.भा., दिनांक : 09-2-83

(मुख्यालय की फा.सं. II/7-1/83-हिन्दी, दिनांक : 17-2-83)

क्र.सं. Sr. No.	डायरी/फा.सं. Diary/F.No.	तारीख Date	किससे प्राप्त From Whom Received	विषय Subject	उत्तर दिया		उत्तर नहीं देना था No reply was necessary	टिप्पणी Note
					हिन्दी in Hindi	अंग्रेजी in English		
1	2	3	4	5	6	7	8	9

कार्यालयों/अनुभागो/डेस्कों/एककों के लिए प्रेषण रजिस्टर

Despatch Register for Offices/Section/Desk/Cells/Units.

प्राधिकार: राजस्व विभाग का पत्र फा. सं. 11011/23/80-रा. भा., दिनांक : 9-2-83

(मुख्यालय की फा. सं. II/7-1/83-हिन्दी, दिनांक : 17-2-83)

क्र.सं. Sr. No.	पत्र/फाइल सं. Letter/F.No.	जारी किया गया Issued			टिप्पणी : यदि तार, संकल्प सामान्य आदेश हो तो ऐसा लिखें Remarks : State if is telegram, resolution, General Order etc. OR reply to an English Letter.	किसको भेजा गया To Whom Sent
		हिन्दी में In Hindi	अंग्रेजी में In English	द्विभाषी रूप में In Bilingual		
1	2	3	4	5	6	7

अनुशासन का महत्व

अनुशासन जीवन का एक अभिन्न अंग है, जिसके बिना एक डग भरना असंभव है। अनुशासन का अर्थ है नियमानुसार बोलना एवं चालचलन रखना। अनुशासन जीवन के हर एक क्षेत्र में अतिआवश्यक है जैसे कि मिलिटरी, फ़ैक्टरी, स्कूल, कार्यालय, वांचनालय, बगीचे, बस-स्टेन्ड, रेल्वे-स्टेशन आदि। अनुशासन के बिना हर एक जगह पर तंगदिली हो जाती है। अनुशासन के बिना मिलिटरी देश की रक्षा नहीं कर सकती, गैर-अनुशासित छात्र अपनी स्कूल को बदनाम कर देते हैं और गैर-अनुशासित कर्मचारी कार्यालय एवं फ़ैक्टरी में सफ़लतापूर्वक काम नहीं कर सकते। अनुशासन के अभाव में कई मुसीबतें खड़ी हो सकती है, जैसे कि स्कूल में विद्यार्थिओं की कम उपस्थिति, राष्ट्रीय संपतिको नुकसान, हड़ताल एवं आम जगहों पर गुंडागर्दी और हिंसा आदि।

अनुशासन दो प्रकार के होते हैं :- (1) स्व-अनुशासन (2) लादा गया अनुशासन। स्व-अनुशासन बच्चों के विकास में बड़ा लाभदायी होता है क्योंकि उसमें कोई डर नहीं होता है। लेकिन लादा गया अनुशासन हंमेशा भयमय होता है इसलिये स्व-अनुशासन ही सर्वोत्तम है। बस-स्टेन्ड, रेल्वे-स्टेशन एवं बैंकमें कतार में खड़ा रहना स्व-अनुशासनका ही सुदृढ़ रुप है। आम जगहों पर तो स्व-अनुशासन बहुत ही अनिवार्य है। जब स्व-अनुशासन काम नहीं करता तब ज़बरदस्ती से लादा गया अनुशासन व्यवस्थाके लिए जरुरी हो जाता है। स्कूल, कार्यालय एवं फ़ैक्टरियों के नीति नियम लादे गये अनुशासन के ही उदाहरण हैं।

अनुशासन का अच्छा वर्तन, नम्रता एवं जिम्मेदारीसे संबंध है। इन सबका सही मिश्रण ही एक जिम्मेदार नागरिक का निर्माण करता है, इसलिए हम सभी को अनुशासनका महत्व समझना चाहिए एवं स्व-अनुशासन का पालन करना चाहिए।

हनी के. याज्ञिक
पुत्र - के. एम. याज्ञिक
अधीक्षक

दिनांक **08-03-2007** को महिला दिवस मनाया गया । इसमे 'हाऊसी' एवं ''पासिंग द पार्सल'' खेल खेले गए । इस अवसर पर विशेष अतिथि के रुप में आमंत्रित सुश्री एम.आई.जे. माईकल, निदेशक, राजस्व आसूचना, अहमदाबाद (इस चित्र में महिला कर्मचारियों के मध्य में बैठी हुई) ने महिला जीवन एवं कामकाजी महिलाओं और गोद लिए गए बच्चों के पालन पर कानूनी कार्यविधि एवं अधिकारों पर मार्गदर्शन दिए । आगे, उन्होंने महिलाओं को अपने अधिकार पहचानने तथा यौन उत्पीड़न से स्वयं अपना बचाव करने सम्बन्धी मुक्त समूह चर्चा करवायी ।

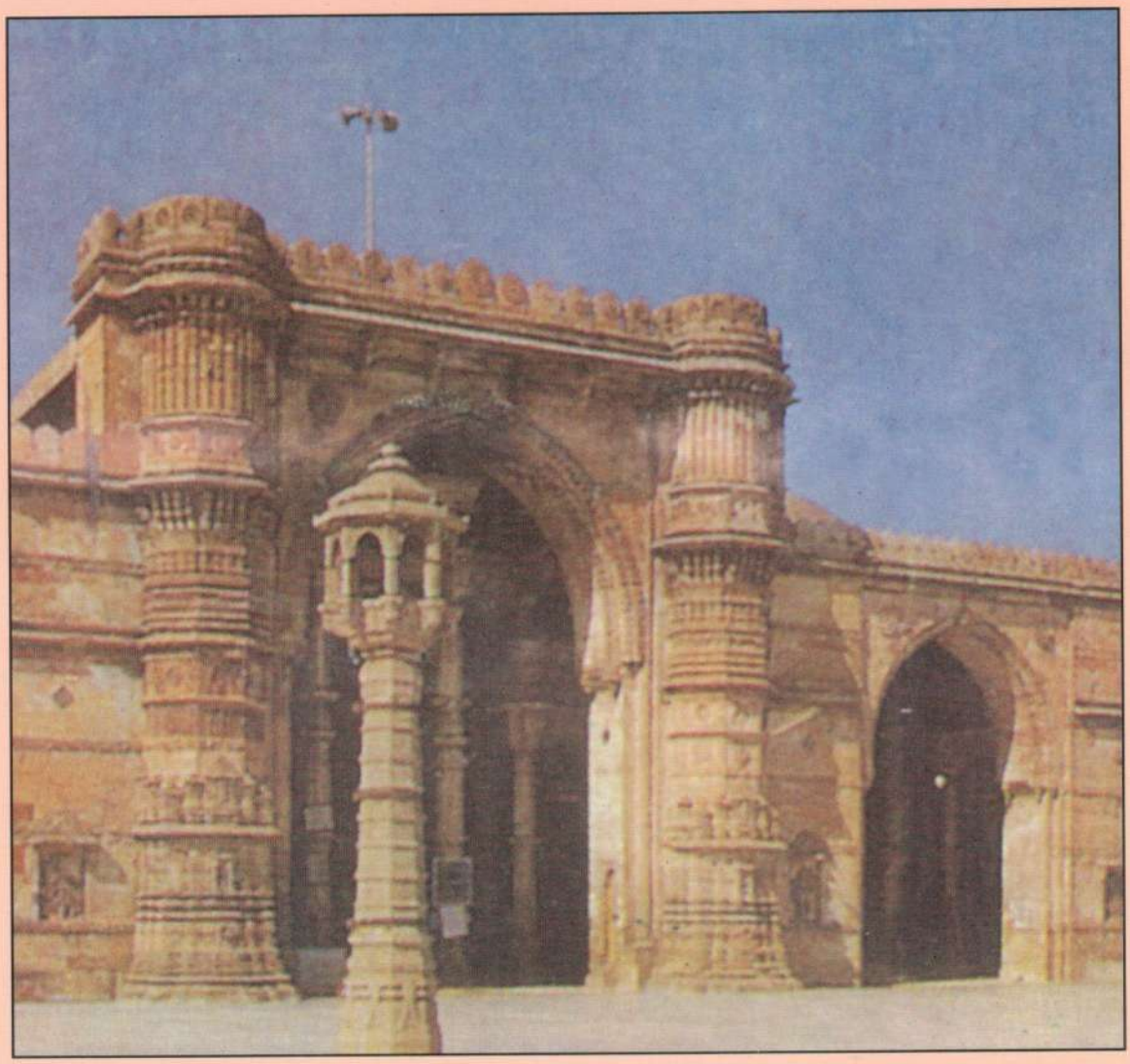

जुम्मा मस्जिद - अहमदाबाद

मुद्रक : नीलमणि प्रिन्टर्स, पूनाजी एस्टेट, धोबीघाट, अहमदाबाद-३८०००४. फोन : २५६२१११६